श्री जी साहिब जी मेहरबान
श्री छोटी वृत
अर्थात
श्री परमधाम का संक्षिप्त वर्णन
यद्धपि यह दिव्य -धाम ,ब्रह्म धाम अनिर्वचनीय ,शब्दातीत एवम् मन-वाणी -बुद्धि आदि से सर्वथा अगम्य अगोचर हैं | यहाँ का प्रत्येक प्रदार्थ असीम ,अद्वैत और सच्चिदानदात्मक - अप्राकृतिक ,आत्मभूत ,स्वयम् सिद्ध ,शुद्ध साकार हैं |तथापि इसे ध्यान गम्य बनाने के लिए शब्द बल का आश्रय लेकर किंचित दिगदर्शन कराया जाता हैं |इस धाम को तर्क युक्ति ,किंवा प्रमाण कोई स्पर्श नहीं करता अतः मानव की शुष्क बुद्धि की कसौटी पर कसा नहीं जा सकता | केवल इस पर पूर्ण श्रद्धा एवम् विशवास करके नित्य अनुक्षण इसका श्रवण ,मनन ,चितवन किया जाय तो अवश्य साक्षात्कार हो |एतदर्थ ही इस असीम अनिर्वचनीय पदार्थ को वट शाखा चन्द्रवर्त न्याय से हृदयगम करने का प्रयास किया जाता हैं
अस्तुतः
प्रथम * दश भूमयात्मक महारसालय श्री रंगमहल का वर्णन
श्री परमधाम निजधाम कैसा हैं कि ,श्री निजधाम की ज़मीन से एक भोम ऊँचे गोल चबूतरे पर से प्रारंभ हुआ हैं | इस चबूतरे की दो सौ एक हांस (पहल) हैं ,किंतु हिसाब की दो सौ ही हांस हैं दरवाजे की हांस दश मंदिर की हैं |दाहिनी तरफ और बाईं तरफ की हांस पच्चीस पच्चीस मंदिर की हैं और गृद (चारों तरफ) की हांस तीस तीस मंदिर की हैं | पूर्व +पश्चिम और दक्षिण दिशा की तरफ श्री रंगमहल के प्रत्येक मंदिर की बाहिरी दीवाल में दो दो महेराब (कमानें) और एक एक

झरोखे आठों भोम तक सुशोभित है |उत्तर की तरफ लाल चबूतरा पर तीन तीन मेहेराब हैं |फिर ताड़ वन में दो दो मेहेराब और एक एक झरोखे हैं |
श्री धाम दरवाजे के आगे चाँदनी चौक (प्रांगण)मे खड़े रहिए | चाँदनी चौक एक छयासठ मंदिर का लंबा चौड़ा सम चौरस हैं |श्री परमधाम को प्रवेश होते दाहिनी (उत्तर) तरफ लाल वृक्ष हैं और बाईं तरफ (दक्षिण)तरह हरा वृक्ष हैं | लाल वृक्ष की उत्तर तरफ चाँदनी चौक की तैंतीस मंदिर की जगह हैं |इसी प्रकार हरे वृक्ष की दक्षिण तरफ चाँदनी चौक की तैंतीस मंदिर की जगह हैं |जिन चबूतरों पर हरा और लाल वृक्ष हैं ,वे दोनों चबूतरे तैंतीस-तैंतीस मंदिर के लंबे चौड़े हैं |इन दोनों चबूतरों के बीच में चौंतीस मंदिर की जगह हैं |हरे लाल वृक्ष के चबूतरों की जगह को छोड़कर पश्चिम (धाम)की तरफ साढ़े छयासठ मंदिर की जगह हैं |इसी प्रकार पूर्व श्री यमुना जी की तरफ साढ़े छयासठ मंदिर की जगह हैं |और तैंतीस-तैंतीस मंदिरों की जगह दोनों चबूतरों में हैं |ये दोनों चबूतरे चाँदनी चौक की भूमि से कमर भर ऊँचे हैं और चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ हैं एवम् फिरता कठेड़ा हैं | वृक्षों की छाया +चबूतरे के बराबर हैं |इस प्रकार चाँदनी चौक का एक सौ छयासठ मंदिर का हिसाब हुआ |
+वृक्षों की डालियां चबूतरे को उलन्घ कर बाहर नहीं निकली है |
श्री रंगमहल का दरवाजा ज़मीन से एक भोम की ऊँचाई पर हैं | सौ सीढ़ियाँ और बीस चांदे चढ़कर (एक सौ छोटी सीढ़ियाँ और बीस चाँदे अर्थात बड़ी सीढ़ियाँ)धाम दरवाजे पर जाइए |सीढ़ियों के दोनों तरफ परकोटे हैं |दरवाजा दो मंदिर का

ऊँचा और दो ही मंदिर का चौड़ा हैं |धाम की दीवार से लगते हुए दरवाजे की दोनों तरफ दो चबूतरे हैं सो दो दो मंदिर के चौड़े और चार चार मंदिर के लंबे हैं |उन दोनों चबूतरों की तीनों तरफ पूर्व ,उत्तर ,दक्षिण में रत्न जडित कठेड़े हैं और पश्चिम की तरफ धाम की दीवार हैं |इन दोनों चबूतरों पर बीस थम्भ हैं |जिनका वर्णन इस प्रकार हैं -दस थम्भ तो दीवार के साथ मिले हुए हैं और दस थम्भ चबूतरों की किनार पर हैं | पाँच प्रकार के नंगों के बीस थम्भ हैं ,,अर्थात चार थम्भ हीरा के ,चार माणिक के ,चार पुखराज के ,चार पाच के और+++ चार नीलवी के हैं |इस प्रकार पाँच नंगों के बीस थम्भ हुए |इन बीस थम्भों में बाईस महेराब हैं |इन बाईस महेराबों में से दो मेहराब दोनों गुरजो की हैं और एक एक चबूतरे पर आठ महेराबें हैं उन आठों में से चार चार महेराबे दीवाल पर अकशी (कमान की आकार मात्र)की हैं और चार चार खुली हैं |और दरवाजे की दो महेराबें -एक तो दीवाल पर अकशी की हैं और दूसरी चबूतरे की किनार पर -सीढ़ी पर हैं |ये दोनों महेराबें दो दो मंदिर की चौड़ी और दो दो मंदिर की ऊँची सुशोभित हैं |दोनों चबूतरों की संधि में दो मंदिर का लंबा चौड़ा और दोनों चबूतरों से एक सीढ़ी नीचा चौक हैं |उस चौक के दोनों तरफ दो महेराबें हैं जो दो दो मंदिर की चौड़ी और एक एक मंदिर की ऊँची हैं और दोनों चबूतरों की जो सोलह महेराबें हैं ,वे एक एक मंदिर की चौड़ी और एक एक मंदिर की ऊँची सुशोभित हैं |दोनों गुरजो की जो दो महेराबें हैं वे भी दो दो मंदिर की चौड़ी और एक एक मंदिर ऊँची शोभित हैं |इस प्रकार बाईस महेराब का हिसाब हुआ |

दरवाजे में सेंदुरियाँ रंग की चौकठ और दर्पण रंग का किमाड़ हैं |दरवाजे के चारों तरफ हरित रंग का किनार हैं और दरवाजे के बीच में रत्न मनियों की नकशकारी (कटाव)तथा कई सुन्दर सुन्दर पत्र फूल वेलियां देदीप्यमान हैं |प्रातः काल सूर्य की किरणें तथा दरवाजें की किरणें परस्पर युद्ध करती हैं अर्थात एक की ज्योति दूसरे की ज्योति को ठेलने की चेष्टा करती हुई प्रतीत होती हैं |उस समय यह दृश्य अतीव मनमोहक और परम आनंददायक दृष्टिगोचर होता हैं |
दरवाजे के अंदर प्रवेश होकर मंदिरों की भीतरी दीवाल के दरवाजे से निकल कर देखिए --तो छः-छः हज़ार मंदिरों की दो हारें फिरती दिखाई देती हैं |तिन दो हज़ार मंदिरों के बीच में छः-छः हज़ार थम्भों की फिरती दो हारें शोभा लेती हैं तथा उनके बीच फिरती तीन गलियाँ सुशोभित हैं |उन छः-छः हज़ार थम्भों की बयालीस हज़ार महेराबें इन गलियों पर देदीप्यमान हैं |ऐसी महेराबें प्रत्येक भोम की गलियों पर सुशोभित हैं |
बाहिरी हार में जो 6000 मंदिर हैं तिन प्रत्येक मंदिरों में पाँच पाँच महेराबे सुशोभित हैं |उन पाँच महेराबों में से दो महेराबे बाहिरी दीवाल पर हैं और एक एक महेराब दोनों मंदिरों की संधि की दीवाल पर हैं तथा एक एक भीतरी दीवार पर हैं |इस प्रकार प्रत्येक मंदिर में देखने में पाँच पाँच और गिनती में चार चार महेराबे है|इस प्रकार छः हज़ार मंदिरों की एक भूमिका में चौबीस हज़ार महेराबें हैं |
उत्तर दिशा में चालीस हांस लाल चबूतरा पर झरोखों के स्थान में सिर्फ़ बारह सौ महेराबें हैं |,सो चौबीस हज़ार महेराबों से पृथक हैं |अर्थात लाल चबूतरा की बारह सौ महेराबें मिल कर

प्रथम भूमिका में बाहिरी हार मंदिरों की पचीस हज़ार दौ सौ महेराबें हैं और दूसरी छः हज़ार मंदिरों की जो हार हैं ,उसके प्रत्येक मंदिर में देखने के चार चार और गिनती में तीन तीन महेराबें हैं |इस प्रकार छः हज़ार मंदिरों की अठ्ठारह हज़ार महेराबें हैं |जिस प्रकार प्रथम भूमिका में थम्भो तथा महेराबों का जो वर्णन किया गया हैं ,ऊपर की नवों भोमों में भी उसी प्रकार समझना चहिए |
|| अब अठ्ताईस थम्भों का चौक देखिए ||

यह अठ्ताईस थम्भों का चौक बारह मंदिर का लंबा और सात मंदिर का चौड़ा झलझलाकार हैं | थम्भों की गिनती इस प्रकार से हैं _ दस थम्भ दरवाजे की तरफ हैं ,और दस थम्भ पश्चिम की तरफ _रसोई के चौक के आगे हैं |चार थम्भ उत्तर की तरफ हैं और चार थम्भ दक्षिण की तरफ हैं |इस प्रकार से अठ्ताईस थम्भ का चौक हुआ | जैसा अठ्ताईस थम्भ का चौक प्रथम भूमिका में हैं ,ऊपर की नवों भोमों में भी उसी प्रकार समझना चहिए |
||अब रसोई के चौक पर नज़र कीजिए ||
(जहाँ पर भोजन लीला होती हैं ।)

पूर्व दीवार में दस मंदिर हैं |पाँच मंदिर दाहिनी तरफ ,तथा पाँच मंदिर बाईं तरफ हैं |और बीच में दस मंदिर की दहेलान हैं |उस दहेलान में दस दस थम्भो की दो हारें सुशोभित हैं |दक्षिण की तरफ दस मंदिर हैं और दस मंदिर की दहेलान हैं |उस दहेलान में बाहिर की तरफ +दीवार हैं |और भीतरी तरफ दस थम्भ प्रकाशमान हैं तथा पश्चिम की तरफ बीस

मंदिर हैं एवम् उत्तर की तरफ दस मंदिर की दहेलान हैं |उस दहेलान में बाहिर की तरफ दीवार हैं और भीतर की तरफ दस मणिमय थम्भ हैं | +(बाहिर की तरफ इस दीवार में दस दरवाजे हैं |इसी प्रकार उत्तर की दीवार में भी दस दरवाजे हैं |)
ईशान कोण से लेकर पश्चिम की तरफ जो दस मंदिर हैं तिनमें से कोने का मंदिर छोड़कर कर दूसरा श्याम मंदिर हैं ,तीसरे में सीढ़ियाँ और चौथा श्वेत मंदिर हैं |इस चौक में पचास मंदिर हैं और तीस मंदिर की तीन जगह पर दहेलान हैं | प्रत्येक मंदिर में देखने के चार चार और गिनती में तीन तीन महेराबें हैं |और एक एक मंदिर के लंबे चौड़े चार दिशा में चार दरवाजे हैं तथा चोर कोनों में चार मंदिर हैं ,ये आठ मंदिर पूर्व कथित अस्सी मंदिर से अधिक हैं | इस चौक के बाहिरी तरफ गली में चारों तरफ पचीस पचीस अथवा कुल एक सौ थम्भ घेर के विध्यमान हैं | भीतरी तरफ प्रत्येक दिशा में उन्नीस उन्नीस थम्भ हैं |चारों तरफ के मिल कर छहत्तर थम्भ हैं और बीच में सत्रह मंदिर का लंबा चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा हैं |उस चबूतरे की किनार पर एक तरफ सत्रह थम्भ हैं चारों तरफ के मिलकर अड़सठ थम्भ चबूतरे के ऊपर जाज्वलयमान हैं |
इस चबूतरे की चारों दिशाओं में तीन तीन सीढ़ियाँ हैं एवम् फिरता कठेड़ा हैं | चबूतरे के ऊपर चंद्रवा और नीचे गिलम (गलीचा)सुशोभित हैं |चबूतरा के बीच में रत्न जडित सिंहासन हैं |
ये रसोई का चौक नवो भूमिकाओं में सुशोभित हैं |दूसरी ,तीसरी और चौथी हार में भी इसी प्रकार के अस्सी अस्सी

मंदिर के चौक हैं |जिस प्रकार रसोई के चौक का वर्णन किया गया हैं उसी प्रकार की रचना और सब चौको (हवेलियों)में भी समझना चहिए |अंतर सिर्फ़ इतना हैं कि रसोई के चौक में जो तीन दहेलाने हैं वे अन्य चौकों में नहीं हैं प्रत्युत दहेलानों के स्थान में मंदिर ही हैं |एक हार में दो सौ एकतीस हवेलियां हैं |चारों हार की हवेलियां सब मिलकर 924 हवेलिया हैं |जैसी एक भूमिका की रचना हैं ,उसी प्रकार से नवो भूमिकाओं में भी समझना चहिए |प्रत्येक हवेली के द्वारों के आमने सामने चौबीस महेराबें सुशोभित हैं |और जहां जहां चार हवेलियों के कोने पड़ते हैं वहां वहां पर भी चौबीस चौबीस महेराबें सुशोभित हैं |इन दरवाज़ों के और हवेलियों के कोने की महेराबें नवो भूमिकाओं में समान हैं |

|| पाँचवा चौक मूल मिलावा ||

पाँचवा चौक मूल मिलावे का हैं ,जिसमें साठ मंदिर हैं और चार दरवाजे चारों दिशाओं में हैं |चौसठ थम्भ बाहेर और चौसठ थम्भ अंदर एवम् चौसठ थम्भ चबूतरे की किनार पर हैं |चबूतरा कमर भर ऊँचा हैं |तीन तीन सीढ़ियाँ चारों तरफ हैं |किनार पर कठेड़ा प्रकाशमान हैं |अब चौसठ थंभों का पृथक पृथक वर्णन करते हैं |पूर्व दरवाजे पर दो थम्भ पाच के हैं |आस पास दो थम्भ नीलवी के हैं |पश्चिम दरवाजे पर दो थम्भ नीलवी के हैं|आस पास दो थम्भ पाच के शोभित हैं |दक्षिण के दरवाजे पर दो थम्भ माणिक के हैं आस पास के दो थम्भ पुखराज के शोभित हैं | उत्तर के दरवाजे पर दो थम्भ पुखराज के हैं ,जिनके आस पास दो थम्भ माणिक के हैं | चारों खाँचों में बारह बारह थम्भ हैं -

-हीरा लसनियां गोमादिक ,मोती पाना प्रवाल |
हेम चांदी थम्भ नूर के ,थम्भ कंचन अति लाल ||

पिरोजा और कपूरिए ,याके आठ थम्भ रंग दोय |
गिन छोड़े दोऊ द्वार से ,बने हर रंग चार चार सोय ||

ये अड़तालीस थम्भ चारों खाँचों के हुए और सोलह चारों दरवाज़ों के हुए |ये चौसठ थम्भ चबूतरा पर सुशोभित हैं |पशमी गिलम बिछी हैं |बैठने से पसम हाथ भर दब जाती हैं और उठने से उठ जाती हैं |गिलम में चार दोरी सुशोभित हैं |++श्याम ,श्वेत ,हरित जरद |लाल पसम भरे तकिए सोलह सोलह थम्भो से लगे हुए एक दोर बने हैं |ऊपर मोतियों की झालर से युक्त अति मनोरम नूर का चन्द्रवा सुशोभित हैं |चन्द्रवा के मध्य में भाँति भाँति की चित्र कला चित्रित हैं | थम्भ ,चन्द्रवा ,गिलम और कठेड़ा झलक रहें हैं |जिनकी किरणें परस्पर जंग करती हुई प्रतीत होती हैं |सामने कंचन रंग का सिंहासन झलकता हैं |जिसमें छः पाये छः डांड़े विध्यमान हैं |एक एक डांड़े में दस दस रंग जवेरो के झलकते हैं |(मोती ,रतन,माणिक ,हीरे ,हेम ,पाने पुखराज ,गोमादिक ,पाच पिरोजा ,प्रवाल) दो छत्री दोऊ स्वरूपों के ऊपर ,दो फूल लाल माणिक के कमल की सी नीलवी की पांखड़ी |छत्री के चारों तरफ जवेरों की झालर ,छः कलश छः डांड़ो पर और दो कलश दो छत्रियों पर हेम के झलकते हैं | पिछले तीन डांड़ो के मध्य दो तकिए हैं |उतरती कांगरी ,पशमी बिछौना ,एक गादी दो चाकले ,पाँच तकिए हैं |श्री राज जी श्री ठकुरानी

जी दोऊ चाकले पर विराजमान हैं |श्री ठकुरानी जी सेंदुरियाँ रंग की साड़ी ,श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी और नीली लाहिको चरनियां |श्रीराज जी को सेंदुरियाँ रंग को चीरा ,आसमानी रंग जड़ाव की पिछौड़ी ,नीला ना पीला बीच के रंग का पटुका ,केशरियां रंग जड़ाव की इजार ,श्वेत रंग जड़ाव का जामा |ये श्री युगल स्वरूप जी का मूल बागा |अद्वैत की लाठी हाथ में लेकर सर्व सुन्दर साथ जी को प्रणाम |ये अद्वैत भूमिका शब्दातीत हैं जिसके एक जर्रे का वर्णन नहीं हो सकता तो सर्वका वर्णन करना तो असंभव ही हैं
|

|| दूसरी भोम || चालीस मंदिर ताड़ वन के लाल चबूतरा की तरफ के हैं |तीस मंदिर खड़ोकली के हैं और चालीस मंदिर ताड़ वन के जो खड़ोकली की उस तरफ हैं | चबूतरे चहेबच्चे लग | बीच चालीस मंदिर || चालीस चहेबच्चे परे | अस्सी बीच तीस अंदर || इन एक सौ दस मंदिरों के सामने एक सौ दस मंदिरों की एक सौ दस हारें हैं |तिन के मंदिर बारह हज़ार और एक सौ हुए |मध्य में एक सौ मंदिर का चौक हैं ,जिनमें छत्तीस मंदिर की परिक्रमा हैं और चौसठ मंदिर का चबूतरा हैं ,जिस पर बत्तीस थम्भ और बत्तीस महेराबे हैं |इस चौक में परिक्रमा के लगते चालीस दरवाजे हैं |एक एक मंदिर में चार चार दरवाजे दिखाई देते हैं ,परन्तु गिनती में दो दो ही हैं |बारह हज़ार मंदिरों की चौबीस हज़ार अर्थात चौबीस हज़ार दो सौ चालीस + महेराबे हैं | भूलवनी सोलह हवेलियों की जगह में हैं |श्रीराज जी श्री ठकुरानी जी समस्त सुन्दर साथ

सहित झीलना ,सिनगार करके खेलते हैं और कभी खेलकर झीलना ,सिनगार करते हैं |

+ दो सौ चालीस महेराबें गिनने का तरीका -किनार के जो एक सौ दस मंदिर हैं ,उन मंदिरों में महेराबें इस प्रकार बनती हैं ,और चार कोण में से कोई भी एक कोण से गिनना प्रारंभ करेंगे तो उस कोण से दूसरे कोण तक एक एक मंदिर में तीन तीन महेराबें बन जाती हैं तो एक सौ दस महेराबें ज़्यादा पाएँगे इसी प्रकार जब दूसरे कोण से तीसरे कोण तक गिणेगे तो आपको एक एक मंदिर में मात्र दो दो महेराबें मिलेंगी |पुनः तीसरे कोण से चौथे कोण तक गिनने पर वे ही प्रथम कोण के माफिक एक एक मंदिर में तीन तीन महेराबें पावेंगे ,इसमें भी एक सौ दस महेराबें हुईं |और बीच में जो एक दस मंदिर का चौक हैं उस चौक की किनार पर परिक्रमा के लगते जो चालीस मंदिर हैं उन चालीस मंदिरों में भी एक एक कोण में दस मंदिर पावेंगे तो दोनों कोण के बीस मंदिर ले लीजिए ,बस इस प्रकार दो सौ चालीस महेराबों का हिसाब समझ में आ जावेगा |

|| तीसरी भोम || दरवाजे के ऊपर चार मंदिर की दहेलान हैं |भीतरी तरफ चार मंदिर का चबूतरा हैं जो कमर भर ऊँचा हैं |तीन तीन सीढ़ियाँ चबूतरे के तीनों तरफो हैं |चार मंदिर के दहेलान की दाहिनी तरफ का मंदिर ,नीला ना पीला बीच के रंग का हैं |दूसरी हार में दाहिनी तरफ का पहला मंदिर आसमानी रंग का हैं |दहेलान के दोनों तरफ के छः

मंदिर जो कमर भर ऊँचे हैं |छहो मंदिर के आगे चांदे हैं |जिनके दोनों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ हैं
|

श्रीराज जी श्री ठकुरानी जी समस्त साथ को लेकर प्रातःकाल के समय पाँचवी भोम से पौढ़े उठ कर ,तीसरी भोम के छज्जे पर खड़े होकर ,पशु पक्षियों को दर्शन देते हैं |छज्जा दस मंदिर का लंबा और दो मंदिर का चौड़ा और ऊँचा तो दहेलान और चबूतरे के बराबर हैं |
दर्शन देने के पश्चात श्री राज जी चार मंदिर की दहेलान में सिनगार करते हैं | श्री ठकुरानी जी दूसरी हार का प्रथम मंदिर जो आसमानी रंग का हैं उस आसमानी रंग के मंदिर में सिनगार करती हैं |और सिनगार करके साथ सहित श्रीराज जी के पास आती हैं | चार घड़ी दिन चढ़ते श्रीराज जी श्री ठकुरानी जी चार मंदिर के चबूतरे पर मेवा मिठाई आरोग कर बाहिर के छज्जे पर आकर विराजतें हैं |
श्री नवरंग बाई गान करती हैं |इसी समय अक्षर ब्रह्म श्री राज जी दर्शन के दर्शन लेकर अपने मोहोल को पधारते हैं और सखियाँ पहर दिन बीत जाने पर ,शाक पानादि लेकर वापिस आती हैं |श्री राज श्री ठकुरानी जी को फूलों के आभूषण पहनाती हैं |डेढ़ पहर दिन व्यतीत होने पर सखियाँ पान के बीड़ा सेवा में हाजर करती हैं |श्री राज श्री ठकुरानी जी आरोग के पान बीड़ी लेकर ,दो पहर को नीले पीले मंदिर के बीच में जो मंदिर हैं ,उस मंदिर में शयन करते हैं और सर्व सखियाँ तले प्रथम भूमिका में आरोग के पान की बीड़ी लेकर वन को

खेलने जाती हैं |पहर दिन पिछला बाकी रहता हैं ,तब श्री राज श्री ठकुरानी जी सुख शय्या से उठते हैं |
सखियाँ सब वन से खेलकर आती हैं और श्रीराज श्री ठकुरानी जी के चरणों लगती हैं |तत्पश्चात चार मंदिर की दहेलान में -- चार सखियाँ मिलकर श्री राज जी को दिव्य वस्त्रालंकारों से सिंगारती हैं |तत्पश्चात सुखपालों की इच्छा की तो उसी क्षण छठी भोम के सुखपाल ,तीसरी भोम के झरोखों में आकर सेवा में उपस्थित होते हैं |एक सुखपाल में श्री युगल स्वरूप विराजमान होते हैं |एक एक सुखपाल मे दो दो सखियाँ जोड़े जोड़े वीराजती हैं |अंतरिक्ष इच्छाचारी -मन के समान वेग वाले सुखपालों की आसमान में सवारी छाई चली जाती हैं |श्रीराज श्री ठकुरानी जी समस्त सुंदर साथ को लेकर पाट के घाट पधारते हैं |
इच्छानुसार पच्चीस पक्षों मे -से कोई भी पक्षों की सैर - मनोरंजन क्रीड़ा करने को जाते हैं |वहाँ रमते खेलते छः घड़ी व्यतीत हुई और दो घड़ी दिन बाकी रहा ,एक घड़ी में झीलना (जलक्रीड़ा)किए और एक घड़ी में श्रिगार | कृशन पक्ष में श्रीराज श्री ठकुरानी जी तथा समस्त सुंदर साथ तले की भोम आरोग के एक पहर रात्रि तक चौथी भोम में नृत्य देखते हैं |तत्पश्चात पाँचवी भोम में पौढ़ते हैं |शुक्ल पख में एक पहर रात्रि तक वन में अनेक प्रकार की क्रीड़ा करते हैं एवम् वहीं - वन में ही आरोग कर पाँचवीं भोम में पौढ़ते हैं |(शयन लीला)
|| चौथी भोम || चौथी भूमिका में हवेलियों की तीन हार छोड़कर चौथी हार हवेली में नृत्य की बाखर नृत्य शाला हैं |जिसमें उत्तर ,दक्षिण और पश्चिम ---तीनों तरफ बीस बीस मंदिर हैं |सामने- पूर्व दिशा में बीस मंदिर की दहेलान हैं |उस

दहेलान में मंदिरों की जगह पर बीस बीस थम्भो की दो हारें हैं | दाहिनी---(दक्षिण) तरफ लाखी रंग की दीवाल हैं और बाईं--(उत्तर)तरफ पीले रंग की दीवाल हैं |पीछे (पश्चिम)तरफ श्वेत रंग की दीवार हैं |और सामने पूर्व दिशा में रत्न जडित नीले रंग के स्तंभ (थम्भ) प्रकाशमान हैं |जहाँ जिस रंग की दिवाल हैं वहाँ उसी रंग के थम्भ हैं |श्री राज श्री ठकुरानी जी श्वेत दिवाल को पीठ देकर पूर्वाभि-मुख ,सिंहासन के ऊपर विराजमान होते हैं |और निखिल सखी गण चारों तरफ भर कर बैठती हैं |श्री नवरंग बाई कई तरह से नृत्य करती हैं एवं श्री राज जी के अनेक आनन्दोत्पादक गुणों का गान करती हैं |

|| पाँचवीं भूमिका ||

मध्य में नौ चौक हैं |चार चौक चारों कोण के ,और चार चौक चारों दिशाओं के हैं एवम् एक चौक मध्य में हैं जिसका वर्णन करते हैं |चारों कोण पर चार दो पुड़े (द्विमार्ग)हैं |एक दोपुड़ा के उनासी मंदिर हैं |थम्भ पचासी हैं और गलियाँ बारह हैं | चारों तरफ के त्रिपुड़े अठ्ताईस हैं |एक त्रिपुड़ा के एक सौ दो मंदिर हैं ,एक सौ पंद्रह थम्भ हैं और अठ्ठारह गलियाँ हैं |सात सात चौपुड़ो की सात पंक्तियाँ हैं |जिसके उनचास चौपुड़े हुए |एक चौपुड़ा के एक सौ चौबीस मंदिर हैं |
एक सौ चौवालीस थम्भ और चौबीस गलियाँ हैं |आठ आठ हवेलियों की आठ हारें हैं |जिनकी चौसठ हवेलियाँ हुईं |एक हवेली में तैतालिस मंदिर हैं |चालीस थम्भ चबूतरे के ऊपर हैं |इन हवेलियों में एक एक द्वार और एक एक गलियाँ हैं |चार

दोपुड़ो के तीन सौ सोलह मंदिर हुए |और अठ्ताईस त्रिपुड़ा (त्रिमार्ग)के अठ्ताईस सौ छप्पन मंदिर हुए |उनचास चौपुड़ो के छः हज़ार छहत्तर मंदिर हुए |चौंसठ हवेलियों के सत्ताईस सौ बावन मंदिर हुए |सर्व मंदिरों की संख्या बारह हज़ार हुई |चार दोपुड़ो के तीन सौ चालीस थम्भ हैं |अठ्ताईस त्रिपुड़ो के बत्तीस सौ बीस थम्भ हैं, उनचास चौपुड़ो के सात हज़ार छप्पन थम्भ हैं |चौसठ हवेलियों के पच्चीस सौ साठ थम्भ हैं |सर्व थम्भो की संख्या तेरह हज़ार एक सौ छहत्तर हैं |निखिल गलियों की संख्या सत्रह सौ बयानब्बे हैं |और बड़े दरवाज़ों की संख्या एक सौ चवालीस हैं जिनमें बत्तीस द्वार बाहर गिर्द के हैं और एक सौ बारह अंदर हैं |एक चौक में एकासी चौक हैं |नौ नौ चौकों की नौ हारें हैं |जिनके सर्व चौक एकासी हुए |मध्य का चौक जिसमें श्री राज श्यामा जी प्रवाली रंग मंदिर हैं |वह दो मंदिर का लंबा और दो मंदिर का चौड़ा हैं |जिसमें चार दरवाजे हैं |हरी चौकठ और दर्पण रंग के दीवार -दरवाजे हैं |अंदर की वस्तुओं का तो कोई पार ही नहीं हैं |आगे नूर की चौकी रखी हैं | सुंदर सुख सेज्या के चार पाए और चार डांड़े हैं जिनके ऊपर छत्री सुशोभित हैं |श्रीराज श्री ठकुरानी जी नूर की चौकी पर चारों चरण रखकर सुख शय्या पर पौढ़ते हैं |सर्व सखियाँ श्री युगल स्वरूप के चरणों लाग कर अपने अपने मंदिरों में पधारती हैं |श्री राज जीअन्नताद्वैत स्वरूप होकर सर्व मंदिरों में पधारतें हैं |

|| छठवीं भोम ||

यहाँ पर सुखपाल और तखतरवा रहते हैं |जिस समय श्रीराज श्री ठकुरानी जी और समस्त सुंदर साथ कहीं पधारने की इच्छा करते हैं तब उसी क्षण ये इच्छाचारी सुखपाल (विमान) सेवा में उपस्थित होते हैं |और कोई कोई समय तखतरवा में बैठकर श्री युगल स्वरूप सुंदर साथ को साथ लेकर सुदूर की सैर को जाते हैं |

|| सातवीं भोम ||

छः छः हज़ार मंदिरों की दो हारें हैं और थम्भो की दो हारे हैं ,जिनके मध्य में दो हारें हिंडोलों की हैं |दोनों हारों के बारह हज़ार हिंडोले हुए | यहाँ पर दो हिंडोलों की ताली पढ़ती हैं |श्री राज श्री ठकुरानी जी और समस्त सुंदर साथ आमने सामने नज़र बाँध कर झूलते हैं |

|| आठवीं भोम ||

यहाँ पर छः छः हज़ार मंदिरों की दो हारें हैं ,जिनके मध्य में दो हारें थम्भो की हैं ,दो थम्भो की हारों के मध्य में दो हिंडोलों की हारें हैं और बीच की गली में हिंडोलों की एक हार हैं |तीनों हारों के अठ्ठारह हज़ार हिंडोलें हुए |यहाँ चार चार हिंडोलों की ताली पढ़ती हैं |हिंडोलें खट -छप्पर की भाँति के हैं |श्री राज श्यामा जी एवम् सुंदर साथ आमने सामने नेत्र मिलाकर झूलते हैं |

|| नवमी भोम ||

छः हज़ार मंदिर बाहिरी हार के हैं (बाहिरी हार के मंदिरों की तीनों तरफ दिवाल नहीं हैं मात्र भीतरी दिवाल हैं |बाहिरी दिवाल की जगह छः हज़ार थम्भ हैं और छज्जा हैं) उन मंदिरों में भीतरी तरफ दिवाल हैं |ग्रिद के दरवाज़ों के आगे चांदे हैं |एक एक चांदे के दोनों तरफ भीतर उतरने के लिए तीन तीन सीढ़ियां लगी हैं |बाहिरी दिवाल की हद पर छः हज़ार थम्भ हैं |उन छः हज़ार थम्भो के आगे बाहिरी तरफ एक मंदिर का चौड़ा चारों तरफ फिरता छज्जा बढ़ा हैं |+ छः हज़ार थम्भ छज्जा की किनार पर हैं |थम्भो से लगता हुआ कठेड़ा सुशोभित हैं |आगे ढाल दार छज्जा हैं | दो सौ एक छज्जों पर दो सौ एक सिंहासन हैं | एक एक सिंहासन के आस पास छः छः हज़ार कुर्सियां हैं |श्री राज श्री ठकुरानी जी जिस दिशा में विराजते हैं उसी दिशा के तमाम दृश्यों का परस्पर वर्णन करके प्रमुदित होते हैं |
+ एक मंदिर की जगह तो बाहिरी हार मंदिर से ले ली गयी हैं और एक मंदिर की जगह आगे बढ़ाई गयीं ;इसीलिए दो मंदिर का चौड़ा और चारों तरफ फिरता छज्जा हुआ |

| दसवीं भोम || * सुख चाँदनी चढ़ाय के ,पूर्णिमा की मध्य रात || चाँदनी की किनार पर बाहिरी हार मंदिरों की जगह में दस कम छः हज़ार दहेलानें हैं |एक एक दहेलान में आठ आठ महेराबे देखने में मालूम होती हैं |किंतु संख्या छः छः महेराबों की हैं |दरवाजे की दहेलान दस मंदिर की लंबी और चार मंदिर की चौड़ी हैं |उस दहेलान के अंदर दस दस थम्भों की चार हारें हैं और चार-चार की दस हारें हैं बाहिरी तरफ खुला एक मंदिर भर का छज्जा हैं जिसकी किनार पर कठेड़ा लगा

हैं | कठेड़ा के बाहिरी तरफ ढालदार छज्जा हैं और भीतर की तरफ चाँदनी से कमर भर ऊँची एक मंदिर की खुली रोंस हैं जिसके किनार पर कठेड़ा सुशोभित हैं |दो सौ एक हांस में दो सौ एक चाँदे हैं |एक एक चाँदे के दोनों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ हैं |

मध्य में कमर भर ऊँचा चबूतरा हैं |उस चबूतरा के चार कोण पर चार चहेबच्चें हैं |चेहेबच्चा के तीनों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ हैं ,एक तरफ से चबूतरा मिल गया हैं और चबूतरा के मध्य में गज भर ऊँचा सिंहासन हैं |सिंहासन को घेर कर चारों तरफ कुर्सियां धरी हैं |श्रीराज श्री ठकुरानी जी तथा समस्त सुंदर साथ पूर्णिमा की रात्रि को इस चाँदनी पर पधारतें हैं |चबूतरा के ऊपर खड़े होकर देखने से दसों दिशाओं की वस्तु देखने में आती हैं |इस चबूतरा के चारों तरफ अनेक रमणीय बगीचे (फुलवारियाँ) हैं और वे बगीचे नहेरें ,चहेबच्चे और फुहारों से युक्त होकर अपार शोभा को धारण किए हैं |

|| देहेलानों *** की चाँदनी ||

एक एक देहेलान की चाँदनी पर दो दो गुमतियाँ हैं |छः हज़ार मंदिरों की जगह पर देहेलान की चाँदनी के किनार में छः हज़ार कंगुरें हैं | उन कंगुरों के बीच बीच में कांगरी हैं एवम् हांस हांस पर एक एक गुर्ज हैं |तिन प्रत्येक गुर्ज पर गुमट की अपार शोभा हो रही हैं |गुर्जों की संख्या दो सौ एक हैं |गुमटों पर कलश और कलशों पर ध्वजाएँ फहराती हैं |इन सर्व शोभा को देखकर प्रथम भोम को जाना हैं |उतरते उतरते प्रथम भोम में आकर पूर्व दिशा के दरवाजे से होकर तीनों घाटों का

अवलोकन कर रौंस में होकर दक्षिण दिशा में बटपीपल की चौकी में जाइए |

पूर्व की तरफ पचास हांस में तीन घाट है |दाडिम वन ,अमृत वन और जांबू वन हैं |इसके आगे अग्नि कोण में सोलह हांस का चेहेबच्चा हैं |

***
दसमी भोम के ऊपर देहेलान की चाँदनी ग्यारहवीं चाँदनी मानी जाती हैं |जो किनार किनार में एक मंदिर की चौड़ी और छः हज़ार मंदिर की गोलाकृत फिरती चाँदनी हैं | गुम्मट ध्वजा इससे भी ऊँचे शोभायमान हैं |

|| बटपीपल की चौकी ||

दक्षिण की तरफ पचास हांस में बटपीपल की चौकी हैं |यह चौकी 500 मंदिर भर चौड़ी और पद्रह सौ मंदिर की लंबी हैं |पाँच पाँच वृक्षों की पन्द्रह हारें हैं और पन्द्रह पन्द्रह वृक्षों की पाँच हारें हैं |सब मिलकर पचहत्तर वृक्ष हुए ,जिनके मध्य में छप्पन चौक हैं |और इस चौकी में एक सौ चहेबच्चें हैं |छप्पन चहेबच्चें तो छप्पन चौकों में हैं और सोलह धाम की तरफ और सोलह कुंज वन की तरफ ,चार नारंगी (संतरा)के घाट की तरफ और चार फूल बाग की तरफ और चार चाँदनी के ऊपर हैं |इस प्रकार से एक सौ चहेबच्चें हुए |एक भोम के हिंडोलें एक सौ ***तीस हैं |तब चारों भोमों के हिंडोलें पाँच सौ

बीस हुए |बट पीपल की चौकी की चार भोम पाँचवीं चाँदनी हैं |आगे नैऋत्य कोण का सोलह हांस का चेहेबच्चा हैं |

***

हिंडोलों की गिनने की पद्धति -पूर्व से पश्चिम तरफ पन्द्रह हिंडोलों की चार हारें हैं ,पन्द्रह चौके साठ हिंडोले हुए |उत्तर से दक्षिण को चौदह हिंडोलों की पाँच हारें हैं |सब मिलकर सत्तर हिंडोले हुए |साठ और सत्तर मिलाने से एक तीस संख्या हुई |

| || फूल बाग ||

पश्चिम की तरफ पचास हांस में फूल बाग हैं ,जो लंबा चौड़ा समान हैं |पाँच हांस में एक बगीचा हैं ,ऐसे दस दस बगीचों की दस हारें हैं ,जिनके एक सौ बगीचे हुए |एक बगीचा में नौ चहेबच्चें हैं |चार चक्राव ** के चारों कोण में ,और पाँच फुहारों के हैं एक मध्य का और चार दिशा के |एक सौ **** बगीचों के नौ सौ चहेबच्चें हुए |एकासी रोंसों के ,नौ तियाँ सत्ताईस तीनों रोंसों के हैं |धाम तरफ की रोंस पर तीन हज़ार चहेबच्चें हैं और चार चारों कोण के ,जो सोलह हांस के हैं |सर्व चहेबच्चों की संख्या चार हज़ार बारह हैं |नेहेर के दोनों तरफ पाल पर दो हारें फुलवारियाँ हैं |मध्य में नहेरें आमने–सामने आती जाती हैं | **चक्राव के चहेबच्चों के संबंध में किसी वृत में कोण पर तो किसी वृत में दिशा पर लिखे पाएँ जाते हैं |नक्शों में भी किसी नक्शे पर कोण में किसी नक्शे में दिशा में मिलते हैं |अतएव वाचकगण

उपरोक्त दो प्रकार में से जो ठीक लगे वहीं ग्रहण करना उचित होगा | ****प्रत्येक बगीचों में छोटे छोटे सोलह बगीचे हैं |तिन छोटे बगीचों में तेरह की तेरह हारें फूलों के वृक्ष हैं ,तो एक छोटे बगीचे में एक सौ उनहत्तर फूलों के वृक्ष हैं और बीच बीच में बारह बारह चौक पड़ते जाते हैं |चारों तरफ से बारह चौकों की बारह हारें हो जाती हैं |इस प्रकार से एक सौ चवालीस चौक एक छोटे बगीचे में हो जाते हैं | ऐसे ऐसे छोटे बगीचे सोलह सौ हैं |

|| नूर बाग -लौह वन || दस ** सीढ़ियाँ धाम में आने जाने के लिए हैं | जैसा बाग ऊपर का हैं ,वैसा ही नीचे का हैं |लंबा चौड़ा समान हैं |दस दस बगीचों की दस हारें हैं |जिनके एक सौ बगीचे हुए |एक एक बगीचा में नौ नौ चहेबच्चें हैं |एक सौ बगीचों के नौ सौ चहेबच्चे हुए |एकासी रोंसों के और छत्तीस चारों तरफ के हुए |सब चहेबच्चों की संख्या एक हज़ार सत्रह हुई |एक बगीचा के गृद के छः सौ लौह स्तंभ -फिलपाए हैं | एक सौ बगीचों के साठ हज़ार थम्भ हुए और सर्व बगीचों को घेर कर छः हज़ार थम्भ हैं | सर्व थम्भो की संख्या छयासठ हज़ार हुई |आगे वायव्य कोण का सोलह हांस का चहेबच्चा हैं |

** दसों सीढ़ियाँ बगीचों की किनार के मध्य भाग में किनार पर उतरी हैं |अर्थात डेढ़ सौ मंदिर का लंबा चौड़ा बगीचा हैं तिनमें से चौहत्तर मंदिर दाहिनी तरफ और चौहत्तर मंदिर बाईं तरफ रहें बीच में दो मंदिर रहे उन दो मंदिर की संधि की

दिवाल से सीढ़ियाँ उतरी हैं | अथवा पचहत्तर मंदिर दाहिनी तरफ रहे पचहत्तर मंदिर बाईं तरफ रहें ,बीच में सीढ़ी उतरी हैं ,ऐसा भी कह सकते हैं |

इत दिवाल तले दस खिड़कियाँ ,जित सखियाँ आवें जावें |
ये खूबी आवे तो नज़रों ,जो विचार कीजे रूह माहें ||

|| लालचबूतरा ||
यह चबूतरा उत्तर की तरफ चालीस हांस का लंबा और एक हांस का चौड़ा सुशोभित हैं |बारह सौ मंदिर की लंबाई में दिवाल से लगता हुआ चला गया हैं |बारह सौ मंदिर की दिवाल में ,छत्तीस सौ ** महेराबें हैं |चबूतरे की किनार पर कठेड़ा हैं |प्रत्येक हांस में सुंदर गलीचे बिछे हैं |,उन गलीचों के ऊपर हांस हांस में सिंहासन और कुर्सियों की अपार शोभा हो रही हैं |ऊपर छत्री सुशोभित हैं |चालीस हांस में चालीस चांदे हैं |एक एक चांदे के दोनों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं | और दो चांदे पूर्व और पश्चिम में हैं | यहां से बड़े वन के वृक्ष आरंभ होते हैं | आगे एकतालीस एकतालीस वृक्षों की एकतालीस हारें हैं |जिनमें चालीस चालीस अखाड़ो की चालीस हारें हैं |सर्व अखाड़ो की संख्या सोलह सौ हुई |श्री राज श्री ठकुरानी जी सिंहासन पर विराजते हैं | समस्त सखियां कुर्सियों में बैठती हैं | सामने अपने अपने अखाड़ो में पशु पक्षी ,जानवर खेलते हैं ,अर्थात अपनी अपनी विद्या ,कला दिखाते हैं |श्री राज जी सबका मुज़रा स्वीकारते हैं |
** दूसरी भोम से पुनः प्रत्येक मंदिर में दो दो महेराबे और एक एक झरोखा आठों भोम तक सुशोभित हैं |

|| ताड़ वन ||
उत्तर की तरफ ताड़ वन हैं |सो दस हांस का चौड़ा और सत्तरह हांस का लंबा हैं |जिसमें एक सौ सत्तर बगीचे हैं |एक बगीचा के चारों तरफ ताड़ के एक सौ बीस वृक्ष हैं और मध्य के वृक्ष आठ सौ एकतालीस हैं |एक बगीचा के एक भोम के नौ सौ चौक हैं | दसों भोम के नौ हज़ार चौक हैं एक बगीचे में एक भोम में अठारह सौ हिंडोलें हैं | दसों भोम को मिलकर अठारह हज़ार हुए |जिस प्रकार एक बगीचे का वर्णन हैं उसी प्रकार से सर्व बगीचों का वर्णन समझना चहिए | मध्य रोंस के चहेबच्चों की सोलह सोलह की नौ हारें हैं |जिनके एक सौ चौवालीस चहेबच्चे हुए |गृद की रोंसों के चौवन चहेबच्चे हैं |ग्यारह रोंसें चौड़ाई में ,और अठारह रोंसें लंबाई में हैं |रोंसों के बड़े हिंडोले तीन सौ छयासठ हैं |
|| चारो तरफो के वृक्षों की संख्या ||

धाम की तरफ तीन सौ दस ,पुखराज की तरफ की संख्या तीन सौ दस ,पश्चिम दिशा की संख्या 527 ,पूर्व दिशा की संख्या 527 और चार वृक्ष चार कोण पर हैं | सब वृक्षों की संख्या 1678 हैं | एक हांस मे खड़ोकली हैं जो हांस भर की लंबी चौड़ी बराबर हैं |तीस तीस मंदिर तीनों तरफ हैं और तीस मंदिर धाम की दिवाल में हैं |ऊपर एक मंदिर की चौड़ी फिरती पड़साल हैं जिसके किनारे पर कठेड़ा हैं |चारों तरफ चाँदे हैं तिनमें कठेड़ा नहीं हैं | रोंसों के चबूतरों पर चार चार हिंडोलों की ताली पड़ती हैं |सब बगीचों की दस भोम और ग्यारहवीं चाँदनी हैं |ताड़ वन में जो बीच में 841 वृक्ष हैं उनकी दस भोम और ग्यारहवीं

चाँदनी हैं |और किनार पर जो 120 ताड़ के वृक्ष हैं ,उनकी दस भोम तक एक ही भोम हैं |रौंस के ताड़ के बड़े हिंडोलें छोड़कर बगीचे के मध्य में जो 841 वृक्ष हैं उनके हिंडोलें तीस लाख बयालीस हज़ार हैं |और ताड़ के बड़े हिंडोलें कुल तीन सौ * छयासठ हैं |खड़ोकली का जल दूसरी भोम में ही मिलता हैं क्योंकि प्रथम भोम में तो दिवाल (मंदिर) हैं | सामने ईशान कोण में सोलह हांस का चहेबच्चा हैं |

* एक बगीचे की एक तरफ की किनार में एकतीस वृक्ष ताड़ के हैं ,तो दसों बगीचों के मिलाने से धाम की तरफ किनार के ताड़ के वृक्षों की संख्या 310 की हुई |यही संख्या उत्तर पुखराज की तरफ हैं |पश्चिम की तरफ के वृक्षों को 31 को 17 से गुणा किया जाय तो 527 वृक्ष हो जाएँगे |इसी प्रकार पूर्व तरफ भी 31 को 17 से गुणा करें तो 527 की संख्या होगी और चार वृक्ष चार कोण के मिलने से 1678 की संख्या हो जाती हैं |ये सब वृक्ष ताड़ के हैं |

* ताड़ के वृक्षों के संकलित बड़े हिंडोलें गिनने का तरीका -18 को 10 से और 17 को 11 से गुणा करो ,उसका जो फल निकले उस में से खड़ोकली का एक बाद कर दो तो 366 का हिसाब मिल जाएगा |

|| श्री धाम दरवाजा ||

रौंस पर होकर धाम दरवाजे पर जाइए |तहां द्वार के दोनों तरफ एक एक चबूतरें हैं |ये दोनों चबूतरे चार चार मंदिर के लंबे और दो दो मंदिर के चौड़े हैं |जिन पर बीस थम्भ और

बाईस मेहेराबें हैं | बीस थम्भों का वर्णन --दो थम्भ हीरा के ,दो माणिक के ,दो पुखराज के ,दो पाच के और दो नीलवी के हैं |ये दस थम्भ एक चबूतरे पर हैं |इसी प्रकार से दूसरे चबूतरे पर भी हैं |चार मेहेराबें चबूतरे की किनार पर ,चार सामने दिवाल में और दो दोनों तरफ हैं |ये दस मेहेराबें एक चबूतरे पर हैं |इसी प्रकार दूसरे चबूतरे पर भी हैं और दो मेहेराबें बड़ी ,दरवाजे की हैं | ये बाईस मेहेराबो का वर्णन हुआ |

|| चाँदनी चौक ||

बीस चांदे ,सौ सीढ़ियाँ उतर कर चाँदनी चौक में आइए | दक्षिण तरफ हरा वृक्ष हैं ,उत्तर तरफ लाल वृक्ष हैं |आगे पाँच सौ मंदिर भर में अमृत वन हैं जिसके तीन भाग हैं |दोनों तरफ के दो हिस्से ,एक सौ सड़सठ एक सौ सड़सठ मंदिर के हैं |मध्य का हिस्सा चाँदनी चौक से मिला हैं जो एक सौ छयासठ मंदिर भर का हैं |तीनों हिस्सों में तिरासी तिरासी वृक्ष हैं |एक घाट की चौड़ाई में अढ़ाई सौ वृक्ष हैं और लंबाई में श्री जमुना जी तक हैं इसी प्रकार सब घाटों में हैं |अमृत वन में तरह तरह के मेवे हैं |जैसे कि अंजीर ,अखरोट ,सेव ,नाशपाती ,और द्राक्षों के गुच्छे लटक रहें हैं |

|| श्री यमुना जी का पाल ||

ज़मीन से कमर भर ऊँची रोंस बाहिरी तरफ हैं | रोंस से कमर भर ऊँचा पाल हैं और पाल से कमर भर नीची जल की रोंस हैं |इस रोंस पर से हाथों से जल का स्पर्श करते हैं |पाल अढ़ाई सौ

मंदिर भर चौड़ा हैं |इस पाल पर पाँच हारें बड़े वन के वृक्षों की हैं |जिनमें चार * चौक हैं |और दो ** चौक दोनों तरफ हैं |इस प्रकार छः चौक हैं | जहाँ दो घाटों का मिलाप होता हैं ,वहाँ दोनों घाटों की संधियों में देहूरियाँ हैं | पाँच पाँच वृक्षों की ग्यारह हारें ,और ग्यारह ग्यारह वृक्षों की पाँच हारें ,एक घाट की हद में पाल ऊपर सुशोभित हैं |जिनके पचपन वृक्ष हुए |ऐसे वृक्ष हरेक घाट पर हैं |एक घाट पर***चालीस चौक हैं | जिनमें चौबीस की चौबीस हार अर्थात पाँच सौ छहत्तर वृक्षों का बगीचा शोभित हैं |ऐसे बगीचे एक घाट की हद में चालीस हैं |इसी तरह हर घाट में हैं |प्रत्येक घाट की हद में पाल की पाँच सौ मंदिर भर की लंबाई हैं और अढ़ाई सौ मंदिर की चौड़ाई हैं |हर घाट पर जो पचपन वृक्ष हैं वे बड़े वन के हैं |वे जिस जिस घाट पर सम्मलित होते हैं उसी के रूप बन जाते हैं |जैसे के केल के केल में ,नींबू में लिबोई के ,अनार में दाड़ीम के वृक्ष हैं |इस प्रकार सातों वनों में सात ही वन बन जाते हैं ,इन बड़े वन के वृक्षों की पाँच भोम छठवीं चाँदनी **** हैं | जैसा पाल श्री जमुना जी का इस तरफ हैं वैसा ही उस तरफ अर्थात अक्षर धाम की तरफ हैं |

* एक एक चौक पचास पचास मंदिर के लंबे चौड़े हैं |
** दोनों किनारों के जो चौक हैं वे 25-25 मंदिर के चौड़े और पचास पचास मंदिर के लंबे हैं |
*** 11 वृक्षों के मध्य में 10 चौक बन जाते हैं |ऐसे ऐसे चौक 10 -10 की चार हारे होने से एक घाट की हद में चालीस चौक हो जाते हैं |

****सात घाटों में से केल और वट ,इन दोनो में बड़ो वन आया हैं इस लिए उक्त दोनों घाट की पाँच भोम छठी चाँदनी हैं |बीच के जो पाँच घाट हैं उनकी दो भोम तीसरी चाँदनी हैं |और पाल ऊपर सातों घाट में बड़ो वन आया हैं ,इस लिए पाँच भोम छठी चाँदनी आईं हैं |परन्तु 40 चौकों में जो 24 की 24 हारें वृक्ष आएँ हैं उनकी मात्र दो भोम तीसरी चाँदनी हैं |

|| पाट घाट ||

तले सोलह थम्भ नीलवी के जल में झलकते हैं |श्री यमुना जी तीसरा भाग का जल पाट ने ढ़ाँक लिया हैं | पाच के दो थम्भ धाम की तरफ हैं ,दो थम्भ पुखराज के केल के घाट की तरफ हैं ,माणिक के दो थम्भ अक्षर की तरफ हैं ,हीरा के दो थम्भ वट की तरफ हैं और चारों कोण में नीलवी के चार थम्भ हैं |ये बारह थम्भों का वर्णन हुआ |इनकी ** एक भोम दूसरी चाँदनी हैं |किनार पर कठेड़ा हैं |जल में चार चार थम्भ और तीन तीन घड़नाले हैं |जैसा पाट का घाट इस तरफ हैं वैसा ही उस तरफ अर्थात अक्षर धाम की तरफ हैं |
**जल की ज़मीन में सोलह थम्भ नीलवी के हैं |उन सोलह कें ऊपर श्री यमुना जी की भीतरी रोंस के बराबर में पट कर के एक चबूतरा हुआ |यही पाट की प्रथम भोम हुई |इस पाट के ऊपर पाँच रंग के रत्नो के बारह थम्भ आए हैं ,इन बारह थम्भों के ऊपर चाँदनी आईं हैं |अतएव पाट की एक भोम दूसरी चाँदनी हुई |

|| जांबू का घाट ||

धाम दिवाल के सामने छत्रियों की तरह वृक्षों की शाखाएं झूमती हैं |दो भोम तीसरी चाँदनी हैं |जैसा जांबू का घाट इस तरफ हैं वैसा ही उस पार अर्थात अक्षर धाम की तरफ हैं |श्री जमुना जी तट सुरम्य ज़रियों से जडित हैं |

|| नारंगी का घाट ||

वट पीपल की चौकी के सामने ,चौक में छत्रियों की भाँति डालियां झूमती हैं |यह नारंगी का घाट पाँच सौ * मंदिर भर चौड़ा हैं और यमुना जी तक लंबा हैं |
* सातों घाटों की चौड़ाई पांच पांच सौ मंदिर की हैं |

|| वट का घाट ||

कुंज वन के सामने ,वट के घाट की पांच भोम और छठवीं चाँदनी हैं |पाँचों भोम में हिंडोलें शोभित हैं |बड़वाईयों के थम्भों की चार हारें चारों तरफ घेर कर स्थित हैं |जैसा वट घाट इस तरफ हैं ,वैसा ही अक्षर की तरफ भी हैं | जैसे और छः घाट पांच सौ मंदिर के चौड़े हैं ,ऐसा ही यह वट का घाट भी पांच सौ मंदिर का चौड़ा हैं |

|| कुंज निकुंज वन ||

कुंज वन मैं कई रंगों के पुष्पों की सुख सेज्या हैं एवं कई फूलों के सिंहासन हैं | मोहोल मंदीरादि भी फूलों के ही हैं |जिस स्थान

पर फल फूल की जिस प्रकार शोभा चहिए ,वहां उसी प्रकार के फल फूल सुशोभित हैं |

"मेवे चाहिए सो लीजिए ;
फल फूल मूल पात |
तित रहे तैसे ही बने :
ये बका बागों की बात ||"

वट की तरफ का कुंज -कुंज चौकोण वाला और ऊपर से ढँपा हैं |निकुंज गोल और खुला हैं | चहेबच्चों में नहेरें आती जाती हैं | गलियों में कई प्रकार कई प्रकार की चित्रकारी एवं कई हुनर हैं |प्रत्येक कुंज एवं निकुंज से आठ नहेरें ,सोलह मंदिरों की पंक्तियाँ ,एवं बत्तीस गलियां निकली हैं | नीचे रेती मोतियों की भाँति झलकती हैं |श्री युगल स्वरूप एवं समस्त सुंदर साथ - आगे रेती में क्रीड़ा करते हैं |इस कुंजवन की दो भोम और तीसरी चाँदनी हैं |बड़े वन के वृक्षों की पाँच हारें ,घाट तथा कुंजवन ,वट पीपल के पास से होते हुए ताल पर गये हैं |

|| वट का पुल ||

जल में ग्यारह ग्यारह थम्भों की ग्यारह हारें और दस घड़नालें हैं |ऊपर पाँच भोम और छठवीं चाँदनी हैं |हर एक भोम में दो सौ बीस महेराबें हैं |सब भोमों के हिंडोलों की संख्या ग्यारह सौ हैं |हरेक भोम में एक एक सौ चौक हैं |पाँचों भोमों में पाँच सौ चौक हैं |चारों तरफ छज्जा हैं |छज्जा के किनारे ग्यारह ग्यारह थम्भ हैं | चार थम्भ चार कोण पर हैं |पुल पाँच सौ मंदिर भर का

लंबा चौड़ा बराबर हैं और ऊपर चाँदनी हैं |पुल के चारों तरफ नूर का कठेड़ा झलकता हैं |मध्य में सिंहासन सुशोभित हैं |

॥ एक महल एक चबूतरा ॥

नीचे वन दिश की रोंस पर दो हारें वृक्षों की हैं ।अग्नि कोने से घूमकर श्री यमुना जी पश्चिम की तरफ चली हैं ।उस जल कोण पर चार हिंडोलों की ताली पड़ती हैं ।दो हिंडोले पाल पर हैं और दो हिंडोले जल पर हैं ।श्री जमुना जी की दोनों तरफ मोहोल हैं ।दोनों तरफ ढपी ,और मध्य में खुली हैं ।दोनों तरफ के कठेड़े जल में झलकते हैं ।दोनों किनारें पर बैठकें बनी हैं श्री जमुना जी सोलह देहुरी के घाट में जाकर तालाब में मिली हैं ।

॥होज कोसर ताल ॥

रौंस --पुखराज ,घाटियां,बंगलों का चबूतरा ,कुंड ,सातों घाट ,दोनों पुल और तालाब ,इन सबको घेर कर अर्थात इन स्थानों से होती हुई झुण्ड के घाट में आकर मिली हैं ।इन रोंस पर दो हारें वृक्षों की चली आईं हैं ।

॥ झुण्ड का घाट ॥

इस घाट में दो देहुरी ,दो चबूतरे और दश मेहराबें है ।दो देहुरियों की आठ छोटी मेहराबें हैं और दोनों देहुरियों के मध्य

में दो बड़ी मेहराबे हैं ।इनके आगे तीन सीढ़ियां चढ़कर ढालदार पाल में जाइये ।और नीचे की पाल से भोम भर की संक्रमणिक सीढ़ियां चढ़कर चौरस पाल पर जाइये ।तहां दो चबूतरे हैं ,जिनके मध्य में चौक हैं ।ये तीनों चौक बराबर हैं ।दोनों चबूतरों के चारों तरफ तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं ।बीच का चौक पाल के बराबर हैं ।इन चौक -चबूतरों में दश मेहराबें हैं ।परन्तु देखने में बारह हैं ।चार चार मेहराबें दोनों चबूतरों पर हैं और दो मेहराबें दोनों (चौक में)हैं ।दोनों चबूतरों पर सोलह दिवार पेड़ों की हैं और चार दिवाल मध्य के चौक पर हैं ।चबूतरे की प्रत्येक दिशा में चार चार* हिस्से हैं ।दो भाग का बीच में द्वार हैं और एक एक हिस्सा में दोनों तरफ दिवाल हैं ।इस घाट की पांच भोम छठवीं चांदनी हैं और सर्व पाल को घेर कर वृक्षों की पांच ** हारें आईं हैं ।दो हारें ढालदार पाल पर ,दो हारें चौरस पाल पर और एक हार दोनों पालों की सन्ध में हैं ।चौरस पाल के चार हिस्से हैं ।एक हिस्सा में घाट ,दूसरे हिस्से में पड़साल ,तीसरे हिस्से में सीढ़ियां और चौथे हिस्से में देहुरी हैं ,जो सर्व पालों पर फिरी हैं ।जहां घाट से सीढ़ियां उतरी हैं ,वहां दोनों तरफ पाल पर दो देहुरी हैं ,जिनके आगे चबूतरे हैं ।चबूतरों पर कठेड़ा हैं ।चबूतरे की एक एक तरफ सीढ़ियां हैं ।दोनों चबूतरों के बीच में छत हैं ।इस छत के नीचे तीन चौक हैं ।उन चौक से तालाब की तरफ तीन सीढ़ियां उतरने पर चार सौ कोस की रोंस पर जाया जाता हैं ।उस चबूतरा से --हाथ से जल का स्पर्श होता हैं ।चबूतरा को घेर कर मेहराबें जल में झलकती हैं ।तीनों घाट इसी तरह के हैं । जो देहुरी पाल पर हैं ,तीन सर्व के आगे कठेड़ा हैं ।जिन चबूतरों से दोनों तरफ भोम भर की सीढ़ियां

उतरी हैं ।तिन सीढ़ियों के दोनों तरफ परकोटा हैं ।जहाँ पर दोनों तरफ की सीढ़ियां आकर मिली हैं वहां पर चौक पड़ा हैं ।चौथे हिस्से में देहुरी आईं हैं ,जिसके चार दरवाजे हैं ।एक ताल तरफ ,एक दाहिनी तरफ ,एक बाईं तरफ और एक पाल अंदर जाने के लिए हैं ।ऊपर तीनों तरफ दिवाल में कांगरी हैं ।चौथी तरफ पाल हैं ।देहुरी पर मध्य में कलश हैं ।उन चबूतरों के नीचे मेहराबें हैं ,उनमें दो दो दरवाजे हैं ।एक ताल तरफ दूसरा पाल की तरफ हैं और दोनों तरफ अकश की दो मेहराबें हैं ।जिन अकशी मेहराब के ऊपर सीढ़ियां उतरी हैं ।पाल के ऊपर फिरती कांगरी शोभित हैं ।

एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिसे चार ।
दो हिसे खूंट दो दिवालों, और दो हिसों बीच द्वार ।।

चारों खूंने दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिसे ।
तरफ आठ पेड दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए ।।

इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारों खूंटों पेड दिवाल ।
जब देखिए बीच चबूतरों, चार द्वार इसी मिसाल ।।

खूंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार ।
सोलें दिवालें हुई सबे, सोभा लेत पेडों हार ।।

जानो तीनों चौक बराबर, बारे द्वार देखाई देत ।
चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढियों पर सोभा लेत ।।

दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों ।
देखे बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों ।।

एक तरफ एक सीढियों, सामी दूजी के मुकाबिल ।
इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल ।।

एक एक सीढियों पर, तरफ दूसरी पेड दिवाल ।
तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल ।।

*जो ऊंची पाल पर पांच हारें बड़ो वन के वृक्ष ,बड़ो वन से घाटों पर होते हुए आयें हैं ,यहाँ पर वह वृक्ष गोलाई हार कतार में पांच पांच सौ मंदिर का अंतर रखते हैं और चौड़ाई में अढ़ाई अढ़ाई सौ मंदिर का अंतर रखते हैं ।

और जो दो वृक्ष बड़ो वन के -पुखराज परवत से घाटियों बंगलों को घेर कर बाहिरी रोंस में होते हुए आयें हैं वे वृक्ष चौड़ाई में पांच सौ मंदिर का अंतर रखते हैं और लम्बाई हार कतार में अढ़ाई सौ मंदिर का अंतर रखते हैं

॥नव देहुरी का घाट ॥

उत्तर तरफ नव देहुरी के घाट में ,***आठ थम्भों पर आठ देहुरी हैं ।एक देहुरी मध्य में हैं ,नीचे घेरकर कठेड़ा हैं ।आगे पड़साल हैं ।उस पड़साल से दोनों देहुरी के मध्य में होकर ताल की तरफ भोम भर की सीढ़ी नीचे उतरी हैं ।

***नव देहुरी के घाट में पाल के ऊपर कमर भर ऊंचा चबूतरा हैं ,उस चबूतरे पर आठ थम्भ हैं ।उन आठ थम्भों पर दो भोम तीसरी चांदनी है ।प्रथम भोम तो नीचे के चबूतरे को मान लिजिए
।

॥सोलह देहुरी का घाट ॥

रोंस की जमीन से एक भोम नीचे जल की जमीन हैं,उस जमीन से ४४ थम्भ उठे हैं ।वे चवालीस थम्भ --रोंस के नीचे पटे हैं ।यह रोंस उन चवालीस थम्भों की चांदनी हुई ।थम्भ इस प्रकार हैं --नौ नौ थम्भों की पांच हारें हैं ।तिनमें से बीच में एक थम्भ कम हैं ,जहाँ पर कुंड हैं ।श्री जमुना जी की तरफ पांच थम्भ ,और तालाब की तरफ पांच थम्भ हैं ,इन दश थम्भों के ऊपर दोनों तरफ रोंस का चबूतरा हैं ।ये दश थम्भ चवालीस थम्भों में शामिल हैं
।

उपरोक्त दश थम्भों में से ,पांच थम्भ जो श्री जमुना जी की तरफ हैं ,तिन पांच थम्भों में चार जाली मार्ग --घड़नालें हैं ।इन घड़नालों में होकर श्री जमुना जी का जल तालाब में प्रवेश करता हैं और भीतरी तरफ जो पांच थम्भों में चार

घड़नालें --जाली मार्ग हैं,उन मार्ग से श्री यमुना जी का जल तालाब में प्रविष्ट होता हैं ।

कथित चौवालीस थम्भों में से बीच के चौंतीस थम्भों के ऊपर --पाल मोहोलो की जमीन के बराबर ऊंचाई में एक चबूतरा हैं ।इस चबूतरा के ऊपर चौंतीस थम्भ उठे हैं ।इन चौंतीस थम्भों में से दोनों तरफ पांच पांच अर्थात दश थम्भों के ऊपर दोनों तरफ झरोखे आयें हैं इन चौंतीस थम्भों में से दोनों तरफ के झरोखे के दश थम्भ बाद कर --मध्य भाग में सोलह थम्भ फिर कर आयें हैं ।इन सोलह थम्भों को कठेड़ा हैं ।जिन सोलह थम्भों के मध्य में आठ थम्भ हैं ,इन आठ थम्भों के मध्य में अढ़ाई सौ मंदिर का लम्बा चौड़ा कुंड हैं ,कुंड को घेर कर कठेड़ा हैं और फिरती बैठक हैं ।और सोलह थम्भों की घेर कर चारों तरफ पड़साल हैं ।उस पड़साल की एक तरफ सोलह थम्भों की हार में पांच थम्भ हैं और दूसरी तरफ पाल मोहोल की दिवाल हैं ।इन दिवाल की कमानों (मेहराबों)में होकर पाल की मोहोलातों में जाइये ।तालाब की तरफ टापू मोहोल के दरवाजे की मेहराबों के सामने घाट की मेहराबें हैं ,अर्थात पांच थम्भों में चार खुली मेहराबें आईं हैं ।इन चारों मेहराबों को बीच में लेकर ऊपर एक अकशी बड़ी मेहराब आईं हैं ।इन चारों मेहराबों के दोनों बगल एक एक मेहराब और आयीं हैं ।ये छः मेहराबें तालाब की तरफ हैं ।इसी प्रकार श्री यमुना जी की तरफ भी छः मेहराबें आयीं हैं और भीतरी तरफ की छः कमानों के आगे ---भीतरी और चबूतरा के किनार पर अढ़ाई अढ़ाई सौ मंदिर के अंतर से चार थम्भ आये हैं वे चार थम्भ चौतीस *थंभों से पृथक हैं ।इन चार थंभों के

आगे तालाब को तरफ तीन सीढियां नीचे चार सौ कोस या पांच सौ मंदिर का चौड़ा फिरता एक रोंस का चबूतरा हैं ।उस रोंस चबूतरा से हाथ लगता हुआ जल हैं ।यह सोलह देहुरी की प्रथम भोम का वर्णन हुआ ।

अब दूसरी भूमिका की शोभा देखिये ।चौतीस थम्भ पटने पर ,ऊपर भोम भर ऊंची फिरती पाल शोभायमान हैं ,उस पाल में कमर भर ऊंचा चबूतरा आया हैं ।उस चबूतरे में पांच पांच थंभों की पांच हारें कुल पचीस थम्भ उठे हैं ।तिन पचीस थंभों में चालीस मेहराबें हैं ।उन चालीस मेहराबों के ऊपर छत आयीं हैं ।उस छत के ऊपर चार चार देहुरियों की चार हारें ,कुल सोलह देहुरियाँ आयीं हैं ।उन सोलह देहुरियों के ऊपर कलश ,ध्वजाओं की अपार शोभा हैं ।छत की चारों तरफ फिरता छज्जा हैं ।उस छज्जा को फिरता कठेड़ा लगा हैं ।इस सोलह देहुरी की घाट की दो भोम तीसरी चांदनी हैं ।अर्थात प्रथम भोम में चोंतीस थम्भ और कुंड हैं ।दूसरी भोम में पचीस थम्भ *और दोनों तरफ झरोखे पड़े हैं और तीसरी चांदनी में ,सोलह देहुरियाँ ,छज्जा ,कठेड़ा और ध्वजाओं की अपार शोभा हैं ।

*बीच का पचीसवाँ थम्भ यही से उठा हैं ,इसके नीचे यह थम्भ नहीं हैं वहां कुंड हैं
* चौतीस थम्भ जो हैं वह सवा सौ सवा सौ मंदिर के अंतर पर आएं हैं

॥तेरह देहुरियों का घाट ॥

पाल पर चबूतरा हैं ।जिसको घेर कर कठेड़ा हैं ।और फिरते आठ थम्भ हैं ।आठ थंभों पर आठ देहुरी हैं ।उन आठ देहुरियों के मध्य में चार देहुरी हैं ।तिन चार देहुरियों के मध्य में एक देहुरी हैं ।ये तेरह देहुरी हुई । आगे पड़साल हैं ,पड़साल से सीढियां उतरी है ।पाल पर दो देहुरी हैं ।तिनके आगे दो चबूतरे हैं ।दोनों चबूतरों के मध्य में छत हैं ।सर्व ताल की पाल ,एक सौ अठ्ठाइस हान्स की हैं ।जिसमें एक हान्स पांच सौ मंदिर (चार सौ कोस)की हैं ।दोनों तरफ देहुरी हैं ।जहाँ दो हांसों का कोण पड़ा हैं तिसके मध्य में एक देहुरी हैं ।इसी प्रकार की एक सौ अठ्ठाइस देहुरी हैं ।तिन के आगे चबूतरा और कठेड़ा हैं ।चबूतरा से दोनों तरफ भोम भर की सीढ़ी उतरी हैं ।जहाँ पर दोनों तरफ की सीढियां मिली हैं ,उस चौक पर नीचे छोटी देहुरी हैं ।सर्व देहुरी एक सौ अठ्ठाइस चहिए।किन्तु एक सौ चौबीस ही हैं ।चार देहुरी चार घाटों पर नहीं हैं ।

॥पाल अंदर की महलातें ॥

मेहराबों में से होकर पाल के अंदर जाइये ।तहाँ घूमती हुई पड़साल हैं ।पड़साल के आगे मंदिरों की दो हारें ---एक पड़साल के लगती ,और एक हार बाहिरी किनार पर फिरती

हैं ।तिन दोनों हार मंदिरों के मध्य में थंभों की दो हारें हैं ।उन थंभों में हिंडोले लगे हैं ।

॥टापू महल ॥

टापू महल के साठ मंदिर और चार दरवाजे, इनके चारों तरफ गहरा जल हैं ,अतएव चौसठ दल का पुष्प के समान टापू के महल की शोभा हैं ।आगे इसका क्रमशः वर्णन करते हैं ।चारों तरफ चार बड़े दरवाजे हैं ,और गुर्ज फिरे हैं ।साठ साठ मंदिरों की दो हारें हैं ।तिनके मध्य में एक हार थंभों की हैं और भीतरी हार मंदिरों के भीतरी तरफ थंभों की दूसरी हार हैं ।मध्य में चबूतरा हैं ।चबूतरे की किनार में थंभों की तीसरी हार हैं ।चबूतरा कमर भर ऊंचा हैं ।चबूतरे के चारों तरफ से तीन तीन सीढियां उतरी हैं ।और चारों तरफ कठेड़ा हैं ।चबूतरे के मध्य में चेहेबच्चा हैं ।तहाँ फूलों के भांति फुहारें छूटते (उड़ते) हैं ।भीतरी हार मंदिरों में गिनती की तीन तीन मेहराबें हैं ,परन्तु देखने में चार चार हैं ।बाहिरी हार मंदिरों की मेहराब ,गिनती के पांच पांच हैं परन्तु देखने में छः छः हैं ।एक एक सामने बाहिरी तरफ हैं ।दो दो दोनों गुरजों में हैं ।दो दो पाखे (दो मंदिर के संधि की दीवाल में)हैं और एक एक भीतरी तरफ हैं ।ये देखने में छः छः हैं और हिसाब के पांच पांच दरवाजे हैं ।बड़े चार दरवाजे घाटों की तरफ (चार दिशा में)हैं
।

तिनके आगे चौक और कठेड़ा हैं ।गुरजों के मध्य (बीच बीच)में वन हैं ।गुर्ज़ों में पांच पांच दरवाजे हैं ।तीन तीन बाहिरी तरफ हैं ।और दो मंदिरों में जाने के लिए हैं ।टापू की तीन भोम चौथी चांदनी हैं ।नीचे की भोम में चहबच्चा हैं ।और तीन भोमों में चबूतरे हैं ।गुर्ज़ों के मध्य में फिरते झरोखे हैं ।गुर्ज़ों पर प्रत्येक भोम में तीन तीन छज्जे हैं ।एक एक जल की तरफ ,और एक एक वन की तरफ हैं ।तीनों भोमों के नौ छज्जे हुए ।तीन,भोम में दोनों तरफ के वन दिश एक एक छज्जे होने से छः छज्जे हुए ।और प्रति भूमिका में एक एक छज्जे जल दिश तीन छज्जे जल तरफ हुए ।इस प्रकार तीनों भोमों के नौ छज्जे एक एक गुर्ज़ों पर शोभायमान हैं ।
॥तीन तीन छज्जे तरफ जल के ॥छे छज्जे वन पर ॥

॥टापू की चांदनी॥

दोनों तरफ की गुर्जे खुली हैं ।चांदनी को घेर कर कमर भर ऊंची दीवाल हैं ।उसपर लाल कांगरी हैं ।और घेर कर सुन्दर कुर्सियां हैं ।प्रत्येक कुर्सियों पर दो दो सौ सखियाँ बैठती हैं ।मध्य में कमर भर ऊंचा चबूतरा हैं ।जिस पर श्री युगल स्वरूप विराजमान होते हैं ।("चाँद चौदमी रात को "शुक्ल पक्ष की चतुर्दर्शी ---रात्रि को श्री युगल स्वरूप सर्व सखी मंडल को साथ में लेकर यहाँ पधारते हैं ।) और चारों तरफ सुन्दरसाथ विराजते हैं ।

॥चौबीस हान्स का मोहोल ॥

जैसा वर्णन टापू के दरवाजों का हैं ,वैसा ही वर्णन चौबीस हान्स के मोहोल के दरवाजों का हैं ।चौबीस मंदिरों के चार बड़े दरवाजे हैं ।एक एक द्वार के सामने दो दो चबूतरे हैं ।चौबीस गुर्ज़ों में तीन तीन दरवाजे बाहिरी तरफ हैं और दो दो द्वार मंदिर में आने जाने के लिए हैं ।इस प्रकार गुर्ज़ों में पांच पांच दरवाजे हैं ।चौबीस चौबीस मंदिरों की दो हारें हैं ।जिनके मध्य में थंभों की एक हार हैं ।भीतरी हार मंदिर की भीतरी तरफ थंभों की एक हार और हैं ।मध्य में चबूतरा हैं ।चबूतरे के किनार पर थंभों की पुनः एक हार हैं ।इस प्रकार थंभों की कुल तीन हार हुई ।चबूतरे को फिरता कठेड़ा लगा हैं ।चबूतरे की चारों दिशा में तीन तीन सीढ़ियां हैं ।उस चबूतरे के मध्य भाग भाग में पानी से भरा हुआ एक बड़ा जल स्तम्भ हैं जो पाँचों भोम तक गया हैं
।

॥चौबीस हान्स महल की चांदनी ॥

ऊपर छठवीं चांदनी हैं ,जिस पर चहबच्चा हुआ हैं ।उस चहबच्चे में पच्चीस फुहारे सुशोभित हैं ।चौबीस फुहारे चौबीस गुर्ज़ों के कुंडों में पड़ते हैं ।और पचीसवाँ फुहारा मध्य के चहबच्चे में ही पड़ता हैं ।गुर्ज़ों की चांदनी से झरनों की भांति पानी गिरता हैं ।वह जल छः भोम नीचे फिरते चौबीस कुंड हैं,उनमें गिरता हैं ।उन कुंडों में से चौबीस तरफ चौबीस नेहेरें निकलती हैं ।और आगे चलकर चौबीस तालाबों में मिल जाती हैं ।फिर उन तालाबों से दूसरे तालाबों में मिली हैं ।ऐसे एक

नहर में चौबीस तालाब हैं ।इसी प्रकार से चौबीस चौबीस तालाबों की चौबीस हारें हैं ।सर्व तालाबों की संख्या पांच सौ छहत्तर हैं ।तालाबों और नहरों के आस पास मोहोलातें हैं ।उनकी दो भोम तीसरी चांदनी हैं ।तालाबों के बीच बीच में सुन्दर बगीचे हैं ।जिनमें नेहेरें चहबच्चे हैं ,उनमें फुहारे छूटते हैं ।ईशान कोण से दो नेहेरें निकली हैं ,जो सर्व तालाबों को घेर कर एक हो गयी हैं ।और सर्व नेहेरें मिलकर जवेरों की नहर में जा मिली हैं
।

॥जवेरों की नहेर ॥

जवेर की नहेर कैसी हैं -कि भीतरी तरफ के चार पहल के महल से लेकर बाहिरी तरफ के चार पहल के आगे महानद तक शोभायमान हैं । अर्थात भीतरी तरफ के चार पहल से बाहिरी तरफ के चार पहल तक नौ महल सुशोभित हैं ।एक एक महल दोनों तरफ के बगीचों सहित इस तरफ की मध्य नहेर से उस तरफ की मध्य नहेर तक पचास पचास हजार कोस के लम्बे चौड़े विराजमान हैं ।उन पचास हजार कोस के तीन भाग हुए ।एक एक भाग में दोनों तरफ सुन्दर बगीचे हैं और बीच के भाग में ,जमीन से एक भोम भर का ऊंचा चबूतरा आया हैं ।चबूतरे के किनार पर फिरता कठेड़ा आया हैं ।उस चबूतरे से प्रदक्षिणा की जगह छोड़कर चौंसठ चौंसठ महलों की दो हारें आयीं हैं और चारों दिशा में चार बड़े दरवाजों की अपार शोभा आयीं हैं और थंभों की तीन हारें फिरी हैं ।उन तीन थंभों की हार में से एक थंभों की हार कमर

भर ऊंचे चबूतरे की किनार पर आयीं हैं ।चबूतरे से चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियां उत्तरी हैं ।उस चबूतरे में सुमनोहर बगीचे हैं ।चबूतरे के मध्य प्रान्त से पानी से भरा हुआ एक जल स्तम्भ ऊपर को चला गया हैं ।सो चांदनी में चेहेबच्चा हो गया हैं और वहां से फुहारे छूटते हैं।उन फुहारों का जल --किनार में गुर्ज़ों के कुंडों में पड़ता हैं ।वह जल ,उन कुंडों से झरनों के रूप में जमीन से कमर भर ऊंची एक रोंस फिरी हैं उस रोंस के किनारे जो फिरते कुंड हैं ,उन कुंडों में पड़ता हैं ।उन कुंडों से लगी हुई जो नहर हैं --कुंडों में गिरा हुआ जल नहरों में प्रवेश करता हैं और बगीचों में नेहेरें ,चहबच्चे ,फुहारों के रूप में परिभ्रमण करता हैं ।नवो मोहोलों में यही रचना हैं ।
महलों की रचना --चार पहल ,आठ पहल ,सोलह पहल ,बत्तीस पहल और चौसठ पहल की हैं ।पुनः ३२,१६,८,४ पहल -इनों का क्रमशः वर्णन करते हैं ।

चार पहल के महल में --चार भोम ,चार गुर्ज ,ऊपर चांदनी में चार फुहारें ,चार धोध ,और चार कुंड ,चार नेहेरें और चार ही बगीचों की अपार शोभा हैं ।

आठ पहल के महल में --आठ भोम ,आठ गुर्ज ,ऊपर चांदनी में आठ फुहारें ,आठ धोध ,आठ कुंड आठ नेहेरें और आठ ही महा उद्यानों की शोभा को अवलोकन करते हुए कभी आत्मा की तृप्ति नहीं होती ।

सोलह पहल के महल में --सोलह भोम ,सोलह गुर्ज ,ऊपर चांदनी में सोलह फुहारे ,सोलह झरने ,सोलह कुंड ,सोलह नेहेरें ,और सोलह बगीचों की अकथनीय शोभा हैं ।

बत्तीस पहल के महल में ---बत्तीस भोम ,बत्तीस गुर्ज ,ऊपर की चांदनी में बत्तीस फुहारें ,बत्तीस स्त्रोत्र ,बत्तीस कुंड ,बत्तीस नेहेरें और बत्तीस वाटिकाएं हैं ।

चौंसठ पहल के महल में --चौंसठ भोम ,चौंसठ गुर्ज ,ऊपर की चांदनी में चौंसठ फुहारें ,चौंसठ कुंड ,चौंसठ नेहेरें और चौंसठ ही उद्यान हैं ।

पुनः चौसंठ ,बत्तीस ,सोलह ,आठ ,चार --पहल के महल में भी पूर्ववत ही हैं ।

इसी प्रकार चारों तरफ असंख्य नेहेरें फिरती हैं ।उनमें कई तो ढँपी हुई हैं कई खुली हैं ,जो बगीचों ,मोहोलों एवं चेहेबच्चों में विस्तृत हैं ।जिससे चेहेबच्चों में फुहारें छूटते हैं ।कई प्रकार की चित्रकारी हैं और कई प्रकार की कलाएं हैं ।शहरों और पूर्व की तरह कई प्रकार के जानवरो की बस्ती हैं और अनगिनत खूबी खुशाली हैं ।

॥अब माणिक पहाड़ नज़र कर देखिये ॥
माणिक पहाड़ बारह हज़ार लाख जोजन यर्थात अड़तालीस लाख कोस उँचा और अड़तालीस लाख कोस की गिरद है, अड़तालीस लाख कोसकी गिरद ज़मीन से एक भोम

भर उँचा चबूतरा और किनार पर कठेड़ा फिरता है, उस चबूतरे के बारह हज़ार हांस है, एक एक हांस चार चार सौ कौस की है उस चबूतरे की किनार से चार सौ कौसकी जगह परिक्रमा के लिए छोड़कर बारह हज़ार हवेलियों की कतारे आई है, इन हवेलियों की उपरा ऊपर बारह हवेलियों की कतारें आई है, इन हवेलियों की उपरा ऊपर बारह हज़ार भोमें हैं, एक एक भोम चार चार सौ कौसकी ऊँची है, और बारह हज़ार हांस के बारह हज़ार गोल गुर्ज बड़े और बारह हज़ार हाँस के बारह हज़ार हवेलियों के बारह हज़ार बड़े दरवाजे सुशोभित हैं और बारह हज़ार दरवाज़ो के चौबीस हज़ार चबूतरे उन चबूतरों पर चौबीस हज़ार चौखूटे गुर्ज शोभायमान है, और भीतरी तरफ बारह हज़ार हवेलियों की बारह हज़ार पंक्तियाँ जगमगाती है| इस प्रकार प्रथम भूमिका में चौदह करोड़ चालीस लाख हवेली है, इसी प्रकार उपरा ऊपर प्रत्येक भूमिका में यहीं संख्या है| हवेलियाँ इस प्रकारकी है कि एक चौरस एक गोल और एक चौरस एक गोल, इस प्रकार छः हज़ार गोल और छः हज़ार चौरस होने से चार चौरस के बीच में एक गोल, और चार गोल के बीच में एक चौरस ऐसी शोभा देदिप्यमान है| इन हवेलियों के अन्दर की रचना देखिए| एक एक हवेली के अन्दर बारह हज़ार मोहोल है तिन बारह हज़ार मोहोल में से प्रत्येक मोहोल के अन्दर बारह बारह हजार मन्दिर है, उन प्रत्येक मन्दिरके अन्दर बारह बारह हजार कोठरियाँ है, उन सब कोठरियों के बीच में कमर भर ऊँचा चबूतरा है| उस चबूतरे के किनार पर बारह हजार थम्भ घेरके शोभायमान है, उन थम्भो की महेराबो में बारह हजार हिंडोले हैं| इसी प्रकार हवेलियोंके

और मोहोलोंके बीच बीच में कमर भर ऊँचे चबूतरे और चबूतरे के चारों तरफ फिरते बगीचे सौरभ बढ़ा रहे है और प्रत्येक चबूतरों के किनार पर बारह बारह हजार थम्भ और उन थम्भो में हिंडोले लगे है, तथा प्रत्येक बगीचो में नहेर चहबच्चे, फुहारे छूटते हैं| इसके अतिरिक्त बेशुमार शोभा परिपूर्ण है| जैसा एक हवेली का वर्णन लिख आये हैं इसी प्रकार प्रत्येक हवेलियोंके अन्दर जानिये और जैसा वर्णन एक भूमिकामें है, इसी प्रकार का वर्णन प्रत्येक भूमिका में है, प्रत्येक दो हवेली के बीच में थम्भो की दो हारें है|

॥माणिक मोहोल ॥

पूर्व में जो माणिक पहाड़ की हवेलियों का वर्णन कर आए हैं उन हवेलियों से तीन सीढी नीचे उतरने पर गोल फिरता एक चौक आता है, उस चौक से आवृत तीन सीढ़ी ऊँची एक प्रदक्षिणाकी सड़क आती है और उस सड़क से ऊँचा भोम भर ऊँचा बारह हज़ार हांस का गोल चबूतरा आता है| और उस चबूतरे के किनार पर फिरता कठेड़ा है| इस चबूतरा के किनार से प्रदक्षिणा की जगह छोड़कर बारह हजार माणिक मोहोल की एक कतार शोभायमान है| और हांस हांस में गोल गुर्जे और त्रिपोलिया {तीन गली} आती है| और इस माणिक मोहोल के चबूतरा से भोम भर की सीढ़ी उतरने पर पुनः एक माहोधान नजर आता है| तद्युधानसे भोम भर की सीढी चढ़कर बीच के चबूतरे पर जाइये, जिस चबूतरा के मध्यमें एक पानी से भरा हुआ जलस्तम्भ विराजमान है| यह जलस्तम्भ

बारह हजार भोम सीधा चला गया है| बीच में भोम नहीं पटी है| इस जलस्तम्भ की चारों तरफ नानाश्चयनिन्दजन्य पुष्पवाटिका का सौरभ मण्डल आह्लादित करता है| तद्युध्यान में जलस्तम्भ में से अत्यंत बारीक फुहारे मानो पिचकारी के सद्श छूटते है| और तद्युध्यान में अमृत की नहरें चेहेबच्चे और फुहारे बेसुमार छूटते है| और इस चबूतरे के किनार पर बारह हजार थम्भ, बारह हजार में बीस कम तक सीधे चले गये| जिन थम्भो की महेराबों में बारह हजार हिंडोले सुमनोहर सुशोभित है| जिनकी जन्जीरे मन को आकर्षित करती हुई हिंडोलों से संकलित है| इन हिंडोलों की संख्या बारह हजार है| श्री युगल स्वरूप और बारह हजार ब्रहमप्रियाएँ एक ही हिंडोले में बैठकर झूलते है और जिस माणिक मोहोल का उपर वर्णन कर आये है, उन मोहोलों में बारह हजार में बीस कम अथवा ग्यारह हजार नौ सौ अस्सी झरोखों की पंक्ति भीतरी तरफ शोभायमान है| इस चबूतरों के नीचे खड़े रहकर देखने से सैंतालीस लाख बयानब्बे हजार कोस तेजोमय पोलाकार दिखाई देता है| बारह हजार भोम में बीस भोम तक बीच का जलस्तम्भ और माणिक मोहोल पृथक-२ ही गये है| परस्पर दोनों की भोमें न मिलने पर आने जाने का मार्ग नहीं है| जब बारह हजार भोम पहुँचने में माणिक मोहोल बीस भोम कम था, तब जलस्तम्भ से माणिक मोहोल की तरफ फिरते छज्जे निकले ,इस प्रकार माणिक मोहोल से जल स्तम्भ की तरफ फिरते छज्जे निकले --उभय पक्ष के छज्जे एक भोम ऊपर की और अलग-अलग गये, फिर दूसरी भोम से दोनों तरफ के छज्जे मिल गये, तब माणिक मोहोल से आकर जलस्तम्भ की चारों तरफ प्रत्येक भोम में प्रदक्षिणा देने का

मार्ग हो गया| इस तरह ऊपरा ऊपर बीस भोमें मिली हुई है,जब बारह हजार भोमें पूरी हुई तब ऊपर चांदनी हुई|

॥टापू मोहोल ॥

नीचे जिस चबूतरे पर से जलस्तम्भ ऊपरको आया है और किनार पर बारह हजार थम्भ जिनमें हिंडोले लगे हैं, उसी चबूतरा के शिर पर चांदनी में भोम भर का ऊँचा चबूतरा हुआ| उस चबूतरा के किनार पर से प्रदक्षिणा की जगह [रौस] छोड़कर टापू मोहोल की बारह हजार की एक कतार फिरती आई है और उस मोहोल की चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे शोभित है तथा अन्दर चबूतरा है, और चबूतरा के चारों तरफ फिरते सुन्दर बगीचे है| उस बगीचो में नहेरे चहेबच्चे फुहारे उड़ते है और भी आश्चर्यजनक कई प्रकार की शोभा भरपुर है | इस टापू मोहोल की उपरा ऊपर बीस भोमें और इक्कीसवीं चांदनी है| चांदनी ऊपर बीच में कमर भर ऊँचा चबूतरा और चारों तरफ तीन - तीन सीढ़ी तथा फिरता कठेडा शोभायमान है और चारों तरफ फिरते बगीचे चहेबच्चे नहेरे तथा फुहारे छूटते है| चबूतरा के बीच रत्नजडित सिंहासन देदिप्यमान है और घेर कर कुर्सियाँ रखी है, श्री युगलस्वरूप सिंहासन पर आसित होते है और सखियाँ कुरसियो पर विराजती है| ऊपर जिस टापू मोहोल के चबूतरे का वर्णन कर आये है, उस चबूतरा के नीचे बारह हजार जाली द्वार हैं, उन जालीद्वारों में होकर नीचे तालाब है उस तालाब में जल की धारें पड़ती है| यह तालाब नीचे माणिक मोहोल और जल्स्तम्भ के सन्धिमें भोम भर नीचे जो बगीचा आया है उसी के शिर पर यहां

चांदनी पर तालाब हुआ है| इस तालाब के अन्दर नाना प्रकार के रंग बिरंगी कमल सुशोभित है और चैतन्य जहाज जल में तर रहे हैं|
अब तालाब के बाहिर किनार पर पालरूप एक चबूतरा घेरकर हैं ।इस चबूतरा के दोनों किनार पर कठड़े हैं ।इस पाल रूप चबूतरा के ऊपर चार हारें थंभों की फिरती हैं ।तीन थंभों के ऊपर तीन दहलाने हैं ,दोनों किनार की दो दहलाने हैं उनकी एक भोम दूसरी चांदनी हैं और मध्य की जो देहलान हैं उसकी दो भोम तीसरी चांदनी हैं ।अब जिस चबूतरा के ऊपर दहलाने आयीं हैं ,उस चबूतरा के जल तरफ की जो दीवाल हैं उस दीवाल में टापू की तरफ जो जल निकलने के जालीद्वार हैं ,उन्हीं के सामने इस चबूतरे पर भी बारह हजार फिरते जालीद्वार हैं ।तीन जालीद्वार में होकर तालाब का जो जल हैं ,सो देहलान के नीचे बड़े बड़े पाइप (नल)लगे हैं तिनमें से होकर जल देहलान की बाहिरी तरफ भोम भर नीचे फिरते बारह हजार कुंड आएं हैं ,उन कुंडों में फिरते बारह हजार झरने गिरते हैं ।।जिस देहलान के नीचे से जल का प्रवाह बाहिर की और निकलता हैं ,यह देहलान नीचे जो बारह हजार माणिक मोहोल आएं हैं उन मोहोलन के सिर पर आयीं हैं । देहलान के नीचे से फिरते झरने गिरते हैं ।सो नीचे देहलान की दीवाल से लगकर एक सड़क फिरी हैं ,उस सड़क की किनार पर फिरते बारह हजार कुंड आएं हैं ,उन झरनों का जल इन कुंडों में गिरता हैं ।इन कुंडों में से सामने चांदनी पर बारह हजार नहरों में होकर बारह हजार कुंडों की बारह हजार हारें चांदनी पर हैं ,तीन कुंडों में जल आता हैं ।इन प्रत्येक कुंड के चारों कोनों में चार थम्भ आएं हैं ,उन

थंभों में चार कमाने हैं ,चारों कमानों में चार हिंडोले लगे हैं ।चार थम्भ के ऊपर पटी हैं ,इसलिए इन कुंडों के ऊपर चौदह करोड़ चालीस लाख पुल कहते हैं ।नीचे चार हवेली के कोने पड़े हैं उनके शिराने पर कुंड आएं हैं ।और हवेलियों के आसपास जो गालियां आयीं हैं ,उन गलियों के शिर पर यहाँ नेहेरें आयी हैं ।और नीचे जो हवेलियां आयीं हैं उन हवेलियों के शिर पर यहाँ (आकाशी) में चौदह करोड़ चालीस लाख बगीचे आएं हैं ।उन बगीचों में भी नेहेरें चहबच्चे और फुहारे छूटते हैं ।इस प्रकार अपार शोभा हैं ।एक कुंड में से नहर होकर दूसरे कुंड में तथा दूसरे कुंड से नहर में होकर तीसरे कुंड में ।इस प्रकार जल उतरते उतरते बारह हजार कुंड और बारह हजार नहरों के बाद चांदनी की किनार पर जो बड़ी बड़ी गोल गुर्जें आयीं हैं उन गुरजों के कुंड में से होकर गुरज के बाहिरी तरफ होकर नीचे बारह हजार कुंड आएं हैं उन कुंडों में जल गिरता हैं ।उन कुंडों में से बारह हजार नहरों में होकर बारह हजार की बारह हजार हार तालाब आएं हैं ,उन तालाबों में जल आता है ।बारह हजार तालाब के बाद जो नेहेरें हैं उन नहरों में होकर जल महानद में पहुंचता हैं ।

बारह हजार तालाबों की बारह हजार हारें आयीं हैं ।उन तालाबों के किनार पर मोहोल हैं ।इन मोहोलों की पांच भोम छठी चांदनी पर बड़े बड़े हिंडोले फिरते हैं जो कि तालाबों के मोहोलों का वर्णन करके आएं हैं उन मोहोलों में से माणिक पहाड़ कि तरफ जो हार हैं ,उन तालाब के चार कोनों के जो मोहोल हैं ,वे मोहोल छठी चांदनी के बाद बारह हजार भोम में एक भोम कम ऊंचे तक चले गए हैं ।इन चारों मोहोलों के

हिंडोले बड़ी बड़ी जंजीरों में संकलित (लटके) हैं ।वे हिंडोले छठी चांदनी के ऊपर झूलते हैं ।और दूसरी हार तालाब की और आयी हैं ,उन तालाब के चारों कोनों के मोहोल बारह हजार भोम में दो भोम कम ऊँचें चले गए हैं ।इनके हिंडोले भी निचे की चांदनी में घूमते हैं ।इसी प्रकार तीसरी हार तालाब के चार कोने के मोहोल बारह हजार भोम में तीन भोम कम ऊंचे आएं हैं ।इस प्रकार क्रमशः एक एक भोम कम होते होते बारह * हजारवां तालाब के चार कोने के मोहोल ,जमीं से एक ही भोम की ऊंचाई तक रह गए हैं ।तालाब के आस पास बड़े बड़े बगीचे शोभा लेते हैं ।उन बगीचों में हिंडोले ,नेहेरें ,चहबच्चे और फुहारे छूटते हैं ।चार ताल के बीच एक बगीचा ,और चार बगीचा के बीच एक ताल ;ऐसी यहाँ की अपार शोभा सहसा मन को आकर्षित करती हैं ।ईशान कोने से एक नहर का जल दो भाग में विभाजित होकर एक भाग पूर्व दिशा होते हुए अगिन कोण से दक्षिण दिशा को गयी हैं ।और दूसरा भाग उत्तर पश्चिम होकर दक्षिण दिशा में जाकर दोनों नेहेरें एक हो गयी हैं ।इस प्रकार महानद का जल दक्षिण दिशा में जाकर वन की नहर को मिला हैं ।वन की नहर जैसी युक्ति जवेर के महल की हैं ,उसी प्रकार वन के नहर की भी हैं । *बारह हजारवां महल जो महानद के तरफ के हैं उन महलों से क्रमशः पहले महल की एक भोम दूसरी चांदनी ,दूसरे महल की दो भोम तीसरी चांदनी ,तीसरे महल की तीन भोम चौथी चांदनी ,एवं चौथे महलों की चार भोम पांचवीं चांदनी हैं ।शेष पांचवें महल से समस्त महलों की पांच भोम छठी चांदनी हैं ।अर्थात ग्यारह हजार नौ सौ छयानब्बे मोहोलों की पांच भोम छठी चांदनी हैं ।

पश्चिम की चौगान *

पश्चिम की चौगान रंग मोहोल के पश्चिम दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दुरी पर विद्यमान हैं ।उस चौगान में कोई वन वृक्ष नहीं हैं ।वहां पर हीरा की कनी के सदृश बालू की तेजराशि के हजारों चौक पड़े हैं ।उत्तर से दक्षिण की और नौ लाख कोस का लम्बा और पूर्व से पश्चिम की तरफ साढ़े चार लाख कोस का चौड़ा सुशोभित हैं।श्री राज श्री ठकुरानी जी और समस्त सुन्दरसाथ पशु और जानवरों पर सवारी करके दौड़ा दौड़ करते हैं ।और कई प्रकार के खेल करते हैं ।

दूब दुलीचा

यह दूब दुलीचा भी रंग मोहोल के पश्चिम दिशा पर तीन लाख कोस की दुरी पर सुशोभित हैं ।यहाँ पर अनेक रंगों की दूबों के अनेक चौक पड़े हैं ।उन चौकों में नेहेरें ,चहबच्चे और फुहारे छूटते हैं ।चेहेबच्चों के ऊपर देहुरियाँ *बनी हैं (* किसी के मत से देहुरियाँ पाल के मध्य भाग में तो किसी के मत से नहरों की चौपड़ के चेहेबच्चों के ऊपर मानने में आता है ।पुराने नक़्शे में भी दोनों प्रकार का मत पाया जाता हैं ।)उन देहुरी के ऊपर गुमत में सुवर्ण कलश और कलशों पर ध्वजाएं फहराती हैं ।चौकों में कई रंगों से रंगीन गलीचे बिछाए हो ऐसा प्रतीत होता हैं ।यह दूब दुलीचा डेढ़ लाख कोस का लम्बा चौड़ा शोभायमान हैं और अनंत शोभा से विभूषित हैं ।

अन्न वन

यह अन्न वन रंग मोहोल के पश्चिम दिशा पर डेढ़ लाख कोस

के अंतर से फूलबाग और दूब दुलीचा की संधि में विद्यमान हैं ।यहाँ पर अंनत अन्नों के क्षेत्र सुशोभित हैं और एक जाति के मेवे लगे हैं ।वहां पर नहरों चहबच्चे ,फुहारों की अकथ्य शोभा हो रही हैं ।इन चेहेबच्चों के ऊपर देहुरियाँ हैं । उन देहुरियों के ऊपर गुमटों पर सुवर्ण के कलश हैं तथा उन कलशों पर ध्वजाएं फहराती हैं और अनंत शोभा भरपूर हैं ।

||पुखराज के प्रति प्रस्थान ||

अब फूल बाग ,लाल चबूतरा ,बड़ो वन ,तथा ताड़ वन देखते हुए पुखराज की और चले |

ताड़ वन से ऊँचा बड़ावन ,बड़ावन से ऊँचा मधुवन ,और मधुवन से ऊँचा महावन हैं |महावन की चाँदनी पुखराज की चाँदनी से मिली हैं और पुखराज को घेरकर महावन के वृक्ष फिरे हैं |बड़ावन ,मधुवन और महावन पुखराज पहाड़ की प्रदक्षिणा देते हुए उत्तर की तरफ बृह्द विस्तार से फिरे हैं |इन तीनों वनों ने जवेरों की नहरों ,तथा माणिक पहाड़ की हद को अवरोध करते हुए वन की नहर मे होते हुए दूरी से श्री रंग मोहोल की प्रदक्षिणा दी हैं तथा वन नहेर में मिलकर कई हज़ारों भोमे पड़ी हैं | इन भोमों में शहर और पुरा के रूप में पशु पक्षियों की बस्ती बसी हैं |आगे बहुत विस्तृत रूप से फिरे हैं |जैसे कि चार हार हवेली (छोटी रांग) को उलन्घ कर बड़ी रांग की ज़मीन में प्रवेश हुए हैं |वैसे ही इन तीनों वनों बृहद विस्तार हैं |

पुखराज पर्वत

चार लाख कोस की गिरद का एक चबूतरा हैं |उस चबूतरा पर पुखराज पर्वत चार लाख कोस का ऊँचा सुशोभित हैं |जिस चबूतरा पर पुखराज पर्वत आया हैं ,उस चबूतरा की किनार से चार सौ कोस जगह प्रदक्षिणा के लिए छोड़कर एक भोम ऊँची दिवाल फिरी हैं |उस दीवाल की एक हज़ार हाँसें हैं और हांसों की प्रत्येक संधि में एक एक गोल गुरजें हैं तथा हांस हांस के मध्य भाग में नीचे तरहती में उतरने के लिए दरवाजे हैं |उन दरवाज़ों से भोम भर की नीची सीढ़ी उतरी हैं |

पुखराज की तरहटी

तरहटी को घेर के हज़ार हज़ार बगीचों की बावन हारें हैं |तिन प्रत्येक बगीचें के मध्य में एक एक फिलपाए (थम्भ) घेर कर आएँ हैं |इन बगीचों में नहेरें , चहेबच्चे और फुहारों की अपार शोभा हैं |इन बगीचों के भीतरी तरफ हज़ार हज़ार की त्रिपन हारें फिरते मोहोल हैं |मध्य में तरहटी के तीसरे भाग में खजाने का ताल अर्थात पानी का भंडार हैं |उस ताल पर पाँच पैड़ हैं |चार पैड़ चार तरफ ,और एक पैड़ बीच में उन पैड़ों पर महलाते हैं |और खजाने के तालाब से चारों दिशा से चार नहेरें निकली हैं |सो इन नहरों का जल चारों दिशा में विचरता हैं और मध्य में जो पाँचवा पैड़ हैं सो पैड़ पानी से भरा हुआ ऊपर आठ लाख कोस तक गया हैं |ऊपर आकाशी मोहोल

की चाँदनी में इस पैड़ का जल प्रगट हुआ हैं |जब आगे आकाशी मोहोल का वर्णन किया जाएगा तब इस पैड़ के जल का भी वर्णन किया जाएगा |यहाँ पर उसका वर्णन करना अप्रसंग हैं |

जैसी मोहोलायत पुखराज की तरहटी की हैं |वैसी ही मोहोलायत बंगलों की तरहटी की हैं |
=

=
पुखराज की तरहटी और बंगला की तरहटी में प्रथम फिरता बगीचा आता हैं |उसके भीतर महल आते हैं परंतु अधबीच के कुंड ,ढपा चबूतरा ,मूल कुंड इन तीनों की तरहटी में प्रथम महल आते हैं और भीतर बगीचे आते हैं |

हज़ार हांस का गोल चबूतरा
जो नीचे से हज़ार हांस की दिवाल फिरी हैं और तरहटी में बावन हज़ार थम्भ गिरद फिरे हैं |इनके ऊपर यह गोल चबूतरा आया हैं |चबूतरा की किनार में फिरते कठेड़े हैं और प्रत्येक गुर्ज से चढ़ने उतरने के लिए सीढ़ियाँ लगी हैं तथा इस गोल चबूतरा के तीसरे हिस्से में चौकोण (चार कोना वाला) भोम भर का ऊँचा चबूतरा हैं |इस चबूतरा के चारों और कठेड़ा हैं और चारों दिशा से भोम भर की सीढ़ी उतरी हैं | इस चबूतरा की किनार से परिक्रमा की जगह छोड़कर तरहटी से आए हुए पाँचों पैड़ यहाँ से प्रगट हुए हैं | यहाँ से

ऊपराऊपर पाँच भोंम तक यह पाँचों पैड़ सीधे चले गये हैं |सो छठी भोंम से पाँचों पैड़ों के छज्जे पृथक पृथक बढ़ चले | जैसे कि चार दिशा के चारों पैड़ के छज्जे मध्य के पैड़ की तरफ ग्यारह ग्यारह ** ही कोस के निकले हैं |इसी प्रकार मध्य के पैड़ में से भी चारों दिशा को ग्यारह ग्यारह कोस के छज्जे निकले हैं |और एक दिशा के पैड़ से दूसरी दिशा के पैड़ों की तरफ साढ़े सोलह साढ़े सोलह कोस के छज्जे निकले हैं | साढ़े सोलह साढ़े सोलह कोस के छज्जे अढाई सौ भोम पहुँचने पर चार हज़ार एक सौ पच्चीस कोस जगह पर छाया पहुँचाते हैं |उसके पश्चात बारह हज़ार तीन सौ पचहत्तर कोस का छज्जा आधी दूरी तक पहुचने से इस तरफ से साढ़े सोलह हज़ार कोस जगह पर छाया हो जाती हैं |इतनी ही छाया दूसरी तरफ से होनेसे तैंतीस हज़ार कोस जगह का हिसाब पूरा हो जाता हैं |और दिशाओं के पैड़ से पश्चिम उत्तर की घाटी के तरफ़ चवालीस चवालीस कोस के छज्जे निकले हैं |इसी प्रकार दोनों घाटी से पैड़ की तरफ चवालीस चवालीस कोस के छज्जे निकले हैं और पूर्व के पैड़ से बंगला की तरफ चवालीस चवालीस कोस के छज्जे निकले हैं |इसी प्रकार बंगला की चाँदनी से भी पैड़ की तरफ चवालीस चवालीस कोस के छज्जे निकले हैं | पश्चिम-उत्तर की घाटी के महल ,पेड़ के महलों के बराबर सीधे चले गये हैं |और जहाँ से पेड़ों के छज्जे बढ़ चले हैं उन्हीं के बराबर से दोनों घाटियों के छज्जे बढ़ चले हैं |पुखराज का गोल चबूतरा और बंगलों का चौरस चबूतरा ,ये दोनों चबूतरे बराबर ऊँचे हैं |बंगलों के चबूतरे के तीन भाग हुए |बीच के भाग में तेईस सौ चार पृथक पृथक भोम भर ऊँचे चबूतरे हैं

|जैसे की पुखराज के गोल चबूतरे के मध्य भाग में चौरस चबूतरा आया हैं ,उसी प्रकार यहाँ पर भी चबूतरे भोम भर ऊँचे आएँ हैं |उन चबूतरों पर एक पर बंगला और दूसरे पर चहेबच्चा ;फिर एक चबूतरे पर बंगला और दूसरे पर चहेबच्चा| इस प्रकार से चार बंगलों के बीच एक चहेबच्चा और चार चहेबच्चों के बीच एक बंगला ;ऐसा दृश्य बन जाता हैं और दोनों तरफ दो हिस्से हैं |उनके भी तीन तीन हिस्से हुए हैं |मध्य के हिस्से में चार फिलपायो की फिरती किनार हैं और दोनों तरफ के दो हिस्सों में पाँच पाँच वृक्ष आएँ हैं और प्रत्येक बंगला और चहेबच्चा के फिरते बगीचे आएँ हैं और नहेरें ,चहेबच्चें और फुहारे छूटते हैं |
बंगलों की पाँच भोम छठी चाँदनी हैं | चाँदनी की चार लाख कोस की गिर्द हैं |इस चाँदनी पर भोंम भर का चहेबच्चा (तालाब) हैं | सर्व चाँदनी पर एक भोम तक महलायते हैं और प्रत्येक भोम में तालाब की गिर्द बड़ी हैं तथा महलायते सिकुड चली हैं | बंगलों की चाँदनी से ताल के छज्जे पुखराज के पाँचों पेड़ों की तरफ बढ़े हैं |इन आठों निशान के छज्जे एक लाख कोस तक ऊँचे बढ़े हैं |
बंगला की छठी भोम से चौवालीस-चौवालीस कोस के छज्जे ऊपरा ऊपर अढाई सौ भोम तक अढाई सौ छज्जे निकले हैं |इन छज्जों ने चारों और ग्यारह ग्यारह हज़ार कोस जगह बंगलों की ढाँकी हैं |अर्थात बंगलों की हद तक छज्जे बढ़े हैं |बाकी तैंतीस हज़ार कोस जगह पुखराज की तरफ बंगला के चबूतरे की रही जिस के बीच में चार हारें फिलपायों की हैं |और फिलपायों के दोनों तरफ पाँच पाँच वृक्षों की कतारे हैं |इसके ऊपर एक लाख कोस ऊपर तैंतीस हज़ार कोस का

छज्जा पुखराज के लंबे छज्जे से जा मिला हैं |इस प्रकार से बंगला के चबूतरा की संपूर्ण जगह पर छज्जों ने अपनी छाया डाली हैं |इसी प्रकार पुखराज के गोल चबूतरे की -बँगला की तरफ चौवालीस हज़ार चार सौ चौवालीस कोस की जगह हैं ,जिस पर ग्यारह हज़ार कोस जगह में अढाई सौ छज्जों ने अपनी छाया डाली हैं |और |बाकी तैंतीस हज़ार कोस जगह रही |ऊपर जैसे बंगला की तरफ से तैंतीस हज़ार कोस का लंबा छज्जा पुखराज की तरफ आया हैं ,उसी प्रकार पुखराज की तरफ से भी तैंतीस हज़ार कोस का लंबा छज्जा बंगला की तरफ के छज्जे से आ मिला हैं |

इस प्रकार से बंगला का चौरस चबूतरा और पुखराज का गोल चबूतरा ,ऊपर के छज्जों करके संपूर्ण ढ़क गये हैं और जिस प्रकार बंगला और पुखराज के चबूतरे छज्जे कर के ढके हैं उसी प्रकार से पश्चिम उत्तर की घाटी और पुखराज के गोल चबूतरे के बीच में जगह हैं ,वह भी ऊपर के छज्जों से ढक गयी हैं |जैसे कि चार लाख कोस घाटी की जगह हैं ,उनमें तीन लाख छप्पन हज़ार कोस में तो घाटी के महल हैं ,बाकी चौवालीस हज़ार कोस जगह पुखराज के गोल चबूतरे की और हैं |यह जगह इस प्रकार से छज्जों से ढ़की हैं कि जैसे पुखराज के पाँच पेड़ पाँच भोम तक सीधे चले गये ,और छठी भोम से छज्जे निकले हैं |उसी प्रकार घाटी के महल भी पाँच भोम तक सीधे चले गये हैं और छठी भोम से पुखराज की तरफ चौवालीस -चौवालीस कोस के छज्जे निकल चले हैं |इसीलिए अढाई सौ भोम के छज्जों ने ग्यारह हज़ार कोस जगह पर अपनी छाया डाली हैं |बाकी तैंतीस हज़ार कोस जगह घाटी की पुखराज की तरफ बची हैं उस पर तैंतीस

हज़ार कोस का एक ही लंबा छज्जा निकला ; जो पुखराज की तरफ का तैंतीस हज़ार कोस का लंबा छज्जा घाटी की और बढ़ा हैं उसी छज्जे से जाकर मिला |तब दोनों तरफ के लंबे छज्जे मिलने से छयासठ हज़ार कोस का लंबा छज्जा हुआ और ग्यारह हज़ार कोस जगह पेड़ की तरफ रही हैं |उस जगह पर अढाई सौ छज्जों ने अपनी छाया डाली हैं |इसलिए ग्यारह हज़ार कोस जगह यह भी पूरी हुई |इस प्रकार से पुखराज के पहिला छज्जा से घाटी के पहिला छज्जा तक अठासी हज़ार कोस जगह दोनों छज्जों के नीचे आईं हैं |इसी प्रकार से बंगला की तरफ भी दोनों तरफ के छज्जों ने अठासी हज़ार कोस जगह पर अपनी छाया डाली हैं |इस प्रकार बंगला की और घाटी की तरफ की जगह का हिसाब हुआ |
पुखराज के पांच पेड़ ,पश्चिम उत्तर दोऊ तरफ की घाटियाँ और पुखराजी ताल ,ये आठ निशान हुए |इन आठों पहाड़ों के छज्जे छठी भोम से बढ़े हैं |सो भोम भोम पर महलायतें और छज्जा कठेड़ा ये सब एक लाख कोस तक बढ़े हैं |अथवा चार सौ कोस की एक भोम ऐसे अढाई सौ भोम पहुँचने पर एक लाख कोस होता हैं |उनके ऊपर चौदह मेहेराबे हुई |आठ मेहेराबे पाँच पेड़ों की हुई हैं |चार मेहेराबे चारों दिशा में और चार मेहेराबे बीच के पेड़ों पर हैं ,दो महेराबे पश्चिम की घाटी की हैं तथा दो मेहेराबे उत्तर की घाटी की तथा दो मेहेराबे बंगलों की हैं |ये चौदह मेहेराबे एक लाख कोस की ऊँचाई पर हैं |यहाँ से आठों पहाड़ मिलकर तीन लाख कोस तक ऊपरा ऊपर भोम होते हुए चले गये हैं |जिनकी एक हज़ार भोमे हुई तथा चार लाख कोस ऊँचाई पर पुखराज पर्वत की चाँदनी हुई और तालाब बीस भोम कम एक हज़ार भोम तक गया |

फिर ऊपर बीस भोम महलायतें चली गयी हैं |सो पुखराज पर्वत की चाँदनी और ताल के मोहोलों की चाँदनी एक हो गयी हैं |

पुखराज पर्वत की चांदनी

पुखराज की चांदनी चार लाख कोसकी गिर्द है | नीचे के गोल चबूतरे बराबर चांदनी के किनार पर घेर कर छज्जा है| उस छज्जे के किनार पर फिरता
कठेड़ा है| आगे ढालदार छज्जा है| चांदनी के किनार पर घेर कर हांस भर का चौड़ा कमर भर का ऊँचा चबूतरा है, उस चबूतरे पर हजार हांस की मोहोलायतें है| और हजार हांस में हजार गोल गुरजे आई है| ऐसी हजार गुरजो की सन्धि में हजार फिरती हवेलियाँ हैं, जहाँ दो हवेलियों का कोना पड़ा है वहां गोल गुरजे आई है| ऐसी एक हज़ार गोल गुरजे फिरती आई है| हजार हवेलियों के हज़ार बड़े दरवाजे हैं| उन दरवाजों के आगे दो चबूतरे हैं| उन चबूतरों के बीच में चौक है और चबूतरों से लगता हुआ छोटा छज्जा फिरा है| उसका पुनः कठेड़ा है और चबूतरों पर चौखूटे दो हज़ार गुरजे हैं| हर एक हवेलियों के दरवाजों से छज्जों की तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ उतर कर बड़े छज्जे पर जाया जाता है|

हवेलियों की पांच भोम और छटी चांदनी है| पांच भोमों के पांच दरवाजे ऊपरा ऊपर हैं और छज्जे ऊपरा ऊपर हर भोम में है| जहां दो
हवेली की सन्धि है , वहां त्रिपोलिया [तीन गली] पड़ी है, उन त्रिपोलियो के पांच भोम के पन्द्रह पन्द्रह महेराबे बड़े गुरज में

पड़ी है और त्रिपोलियो के आगे चौरस चबूतरे है| इन चबूतरों के किनार पर चार चार थम्भ हैं| जैसी युक्ति [द्रश्य] बाहर की है, वैसी ही युक्ति भीतरी तरफ भी है| जैसे चौखुटे गुर्ज बाहर है, वैसे ही भीतरी तरफ भी है और त्रिपोलिया छज्जा जैसे बाहर है, वैसे ही भीतरी तरफ भी हैं तथा जैसी सीढ़ियाँ तीन तीन बाहरी तरफ उतरी है वैसे ही भीतरी तरफ भी उतरी है परंतु चांदनी के किनार पर कोने में गोल गुरजें बाहर है , ऐसी गुरजें भीतरी तरफ नहीं है और सर्व जोगवाई बराबर है और चार चार हवेली के बीच तीन तीन गली आई है| उन एक एक गली में तीन तीन गली हैं उन गलियों में दो दो हारें थम्भो की आई हैं| और जहाँ हवेलियों के साम- सामने दरवाजें आये हैं, वहाँ चौबीस महेराबे पड़ी हैं तथा जहाँ जहाँ चार चार हवेली के खूंट जुड़े, वहाँ वहाँ चौबीस चौबीस महेराबे आई हैं| ऐसी ही तीन हारें त्रिपोलियो की चार हार हवेलियो के बीच फिरती है और सामने आती है|

चार दिशाओं में चार दरवाजे हज़ार हांस की महलातों के दरवाजे से बृहद { बड़े} रूप में हैं |उन चारों दरवाज़ों के आगे आठ चबूतरे आएं हैं |उन आठों चबूतरों पर आठ गुरजे चौखूटे आएं हैं |उन बड़े दरवाज़ों की महेराब की पाँच भोम तक एक ही छत आईं हैं |वह छत और हवेलियों की छठी चाँदनी के ऊपर ऊँची दीवाल हैं ,ये दोनों बराबर हैं |हवेली की छठी चाँदनी के बाद दरवाजे की ऊपरा ऊपर पाँच भोमे पड़ी हैं और छठवीं चाँदनी हैं |कदाच हवेली के प्रथम भोम से गिना जाय तो दरवाजें की दस भोम ग्यारहवीं चाँदनी होती हैं |चारों दरवाज़ों की यही युक्ति हैं |

इन बड़े दरवाजे के दाएं बाएं दोनों तरफ दोनों तरफ चार हार हवेलियों की एक तरफ के चार दरवाजे आएं हैं |पाँच भोम के बीस दरवाजे हुए |दोनों तरफ के मिलकर चालीस दरवाजे हुए |एक एक हवेली के पाँचों भोम के पाँच पाँच दरवाजे ऊपरा ऊपर आएँ हैं और चार हवेलियों के बीच बीच तीन तीन गली हैं |दोनों तरफ की छः त्रिपोलियाँ हुई |एक त्रिपोलिया के पाँच भोम के पंद्रह मेहराब हैं |ऐसे तीन त्रिपोलियों के पंद्रह तियां पैंतालीस महेराबें हुई और पैंतालीस दूसरी बाजू की |इस प्रकार दोनों तरफ की नब्बे महेराबें हुई |एक त्रिपोलिया के आगे चौरस चबूतरा हैं ,उस चबूतरे पर चार थम्भ हैं और हवेलियों के आगे दो दो चबूतरे हैं |चार हवेलियों के आठ चबूतरे हुए और आठ चबूतरे दूसरी तरफ की हवेली के आगे हैं |दोनों तरफ के सोलह हुए | हर चबूतरा पर चार चार थम्भ और तीन तीन छज्जे हैं |दो छज्जे दो चबूतरों के ,और एक छज्जा दरवाजे के बीच के ,ऐसे-एक हवेली के आगे दो चबूतरे हैं |दोनों चबूतरों के आठ थम्भ हुए |पाँच भोम के ऊपरा ऊपर आठ पंचे चालीस थम्भ हुए ,चारों हवेलियों के एक सौ आठ हुए और एक सौ आठ दूसरी तरफ के ;सब तीन सौ बीस थम्भ हुए |

हर हवेली के आगे दो चबूतरे हैं |उन चबूतरों पर आठ थम्भ हैं |उन थम्भो पर दस महेराबे हैं |आठ महेराब दो चबूतरों पर के ,और दो महेराब दरवाजे के आगे हैं |एक एक दरवाजे के आगे दस दस महेराब हुई |ऐसी चारों हवेलियों की महेराब दो सौ हुईं |इसी प्रकार दूसरी तरफ की दो सौ मिलकर चार सौ

महेराबें हुईं |ऐसी ही युक्ति हर हवेली में आईं हैं |हवेली के चार दरवाजे ,हर दरवाजे आगे दो चबूतरे ,और हवेली के आगे दो हारें थम्भो की हैं |ऐसी हार थम्भो की अंदर आईं हैं |ऐसी ही युक्ति अंदर के मंदिर की आईं हैं |उन सब के आगे कमर भर ऊँचा चबूतरा ,उस चबूतरा को किनार पर थम्भ ,उन थम्भो में हिंडोलें लगे हैं और कठेड़े तथा मंदिरों में सुंदर झरोखें है एवं अंदर नहेरें चहेबच्चें फुहारें छूटते हैं |इस प्रकार अपार शोभा युक्त यह दृश्य सहसा आत्मा को आकर्षित करता हैं |

हवेलियों की चाँदनी

चाँदनी के ऊपर दोनों तरफ प्रदक्षिणा के लिए भोम भर ऊँची चौड़ी दिवाल फिरी हैं |उन दोनों दिवाल पर कांगरी फिरती हैं और आगे दोनों तरफ छज्जा ,कठेड़ा और एक हज़ार गोल गुर्ज बड़े ,चाँदनी से एक भोंम ऊँचे निकले हैं |उन गुर्जों पर गोल फिरती चाँदनी दिवाल के बराबर है |उनकी चाँदनी पर कठेड़ा फिरता हैं |,कठेड़ा के आगे फिरता छज्जा हैं ,और दो हज़ार गुर्जों चौरस हैं |उन गुर्जों पर गुमटी बनी हैं और गुमटी के ऊपर कलश ,कलशो पर ध्वजाएँ फहराती हैं |उन दोनों गुर्जों के बीच कमाने आईं हैं |उनके आगे छज्जा ऐसे दो हज़ार गुर्ज बाहिरी तरफ हैं |विसे ही दो हज़ार भीतरी तरफ हैं और भीतरी तरफ पंद्रह त्रिपोलियाँ जो पाँचों भोमो में आईं हैं ,उन पर बैठक बनी हैं |उस बैठक की किनार पर आठ थम्भ ,आठ महेराबें हैं |तीन महेराबें बाहिरी तरफ और तीन भीतरी तरफ ,एक दाईं तरफ और एक बाईं तरफ |उन महेराबों पर कलश ,कंगूरे शोभायमान हैं और तीन तरफ कठेड़ा हैं तथा

अंदर बाहर बहुत विस्तार हैं |इस प्रकार यहाँ अपार शोभा राशि शोभायमान हो रही हैं |

बड़े चार दरवाज़ों की चाँदनी

ये चार द्वार पुखराज पर्वत के माफक ही विशाल हैं और चारों दरवाज़ों पर दरवाज़ों के माफक ही आठ चबूतरे हैं ,उन आठों चबूतरों पर आठ गुर्ज हैं |सो गुर्ज बहुत ऊँचे चले गये हैं |हर दरवाजे के आगे दोनों चबूतरों के बीच में सुंदर चौक हैं |उन चबूतरों पर चबूतरों के माफक ही थम्भ हैं |हर एक चबूतरा पर चार चार थम्भ ,उन थम्भो पर छत ,कठड़े और बैठके हैं |ये गुर्ज ऊँचे आसमान तक ऊपरा ऊपर चले गये हैं जैसे आठ गुर्ज बाहिरी तरफ हैं ,वैसे ही आठ गुर्ज भीतरी तरफ हैं |

चारों दरवाज़ों की चाँदनी

एक हांस भर की लंबी चौड़ी हैं |हवेलियों की चाँदनी से सीढ़ियाँ चली हैं |दोनों तरफ छज्जे और कठड़े बने हैं |ऐसी युक्ति चारों दरवाज़ों की हैं |आकाशी महल और किनार की हाजार हांस की मोहोलातों के बीच जो बृहद विस्तार की चाँदनी हैं उन चाँदनी में हज़ार किस्म के पुष्प वाटिकाएँ हैं जिनमें नहेरें ,चहेबच्चें और फुहारें छूटते हैं और भी बेशुमार शोभा और सिनगार से भरपूर हैं |उस बगीचा की शोभा देखते आकाशी महल की और चलें |

आकाशी महल
नीचे गोल चबूतरा के मध्य भाग में चौरस चबूतरा आया हैं जिसके ऊपर पाँच पेड़ प्रगट हुए हैं |उसी के शिर पुखराज की चाँदनी से कमर भर ऊँचा चबूतरा हैं | उस चबूतरे की किनार से परिक्रमा की जगह छोड़कर आकाशी महल के तेरह तेरह हवेलियों की तेरह पंक्ति आईं हैं उन सब हवेलियों की संख्या जमा एक सौ उनहत्तर हैं |चार हार हवेली की ज़मीन और आकाशी महल की ज़मीन कमर भर ऊँचे चबूतरे पर होने से दोनों की ऊँचाई बराबर हैं |परंतु चार हार हवेली की पाँच भोम छठी चाँदनी हैं |इस आकाशी महल की एक हज़ार भोम आईं हैं और तेरह तेरह दरवाजे बाहर की तरफ आएँ हैं |चारों तरफ के बावन दरवाजे हुए |उन दरवाज़ों के दो दो चौखूटे चबूतरे हैं ,उन चबूतरों पर चार चार थम्भ हैं ,उन थम्भो पर एक सौ चार गुर्ज हैं |और जो बावन दरवाजे हैं ,उनमें से चार दिशा के चार दरवाजे बड़े हैं |उन दरवाज़ों पर सुवर्ण के किवाड़ हैं जो एक सौ चार गुर्ज हैं सो चौरस हैं और चार गुर्ज चार खुंटो के गोल (पाँच पहल) के हैं |सब एक सौ आठ गुर्ज हुए |गुर्ज चबूतरे दरवाज़ों के माफक हैं ,अर्थात बड़े दरवाज़ों के आस पास के गुर्ज बड़े हैं ,छोटे दरवाजे के गुर्ज छोटे हैं पर प्रत्येक दरवाजा के आगे चौक हैं उन चौकों में से तीन तीन सीढ़ी उतरी हैं तथा हर दरवाजे के चौक से सीढ़ियाँ ऊपर प्रत्येक भोम में लगी हैं |और हर हवेली को घेर कर रोंस फिरी हैं | प्रत्येक दो हवेली के बीच बीच में दो दो हारें थम्बो की फिरी हैं |और जहाँ आमने सामने हवेली के दरवाजे पड़े हैं ,वहाँ चौबीस महेराबे पड़ी हैं |और जहां चार हवेली के कोण

जुड़े हैं ,,वहाँ चौबीस महेराबे पड़ी हैं |और तेरह हवेली के बीच बीच बारह बारह त्रिपोलियाँ आईं हैं ,सो बारह चोके अड़तालीस त्रिपोलियाँ हुई |जहाँ आकाशी मोहोल की चाँदनी हुई ,वहाँ पर इन अड़तालीस त्रिपोलियों के सिर पर अड़तालीस गुर्ज के भाव की अड़तालीस बैठके बनी हैं |सो इसके नीचे प्रत्येक भोम में बारह बारह महेराबे आईं हैं |तीन महेराबे दिवाल की तरफ ,तीन बाहिरी तरफ ,और तीन तीन दाएँ बाएँ |हवेलियों में मंदिर बेशुमार हैं अंदर वन बगीचे ,नहेरें ,चहेबच्चे और फुहारे छूटते हैं |बीच में कमर भर ऊँचा चबूतरा हैं |चबूतरा की किनार पर थम्भ हैं ,उन थम्भो में हिंडोलें हैं और बेशुमार शोभा हैं |हरेक भोमों में छज्जे कठेड़े ऊपराऊपर चले गये हैं और भोम के ऊपर भोमे आसमान तक चली गयी हैं |चारों तरफ तेरह तेरह दरवाजे आएँ हैं |उनके बीच में बड़ा दरवाजा हैं |उस बड़े दरवाजे की दोनों तरफ छः छः दरवाजे आएँ हैं |तेरह चोके बावन दरवाजे चारों तरफ के हुए और जो पचीस हवेली हैं उनके दो बगल के दरवाजेे छोटे हैं ,और आगे पीछे के दो दरवाजे बड़े हैं |इन पचीस हवेलियों को छोड़कर बाको जो हवेलियाँ हैं ,उन हवेलियों के दरवाजे छोटे हैं इसीलिए चौबीस हवेलियों के ,दो बगल के दो दरवाजे छोटे आएँ हैं |पचीस हवेलियों का निरूपण छः छः हवेली चारों तरफ के ,और एक हवेली बीच की |इन हवेलियों का विस्तार बहुत हैं |

आकाशी की चाँदनी

चाँदनी पर नहेरें ,चहेबच्चे और फुहारे छूटते हैं तथा बन-बगीचे हैं |उन बगीचों में जल परिभ्रमण करता हैं |यह जल

वही हैं ,जो तरहटी के जल भंडार से पाँचवें पेड़ में होकर ऊपर को आया हैं |इस चाँदनी पर जो चबूतरा हैं ,उस चबूतरे के चार कोने में जल प्रवाह के जाली द्वार -मार्ग हैं |उन मार्गों से जल प्रगट होता हैं |जिससे यहाँ के बगीचे परिसिंचित होते हैं |

चाँदनी के बीच में कमर भर ऊँचा चबूतरा हैं |उस चबूतरे के ऊपर सिंहासन और कुर्सियाँ हैं |जब श्री राज श्री ठकुरानी जी तथा समस्त साथ जी बैठते है ,तब आसमान में इनके विशद तेजोमंडल की मनोमोहक एवं अकथनीय शोभा परिलक्षित होती हैं |
किनार में जो गुरजे चौरस आईं हैं ,तिनके ऊपर गुमट आएँ हैं |गुमट के ऊपर कलश और कलशो पर ध्वजाएँ लहराती हैं और चारों कोण में जो गोल गुर्जे हैं ,उनके ऊपर खुली चाँदनी हैं तथा फिरती दिवाल पर कलश-कांगरी आईं हैं ,और छज्जा कठेड़ा फिरता आया हैं और फिरता ढालदार छज्जा आया हैं |
अब आकाशी से प्रवाहित होकर जल प्रत्येक भोम में होते हुए नीचे को उतरता हैं |सो संपूर्ण हवेलियों की प्रदक्षिणा देते हुए पुखराज की चाँदनी को प्राप्त होता है |उस चाँदनी के बगीचों में चारों तरफ घूम कर हज़ार हांस की महलातों में प्राप्त होता हैं |तत्पश्चात पश्चिम उत्तर उभय घाटियों में फिर कर पुखराज के पूर्व के दरवाजे की दहेलान में प्रवेश करता हैं |इसका पूरा वर्णन पुखराजी ताल के वर्णन में किया जाएगा |
अब जो पश्चिम उत्तर की दो घाटी हैं ,इन घाटी के महलों के ऊपर ज़मीन से लेकर पुखराज की चाँदनी तक सीढ़ियाँ लगी

हैं |उन सीढ़ियों में होकर बड़े बड़े जानवरों पर अस्वारी करके श्री राज श्री ठकुरानी जी तथा समस्त साथ आते हैं और इसी समय आस पास में रहने वाले छोटे बड़े पशु पक्षी भी श्री राज जी दर्शनार्थ आते हैं |श्री राज श्री ठकुरानी जी समस्त साथ को लेकर किसी दिन सुखपालों पर बैठके आते हैं और कभी कभी घाटियों के महलों में पधारते हैं |तब उस समय आस पास के छोटे बड़े पशु -पक्षी आ आकर अपनी अपनी हाज़िरी देते हैं |

पश्चिम - उत्तर की घाटी

उन घाटियों के तले छोर पर दो चबूतरे हैं |बीच में महेराबी दरवाजा हैं और भोम भोम पर चाँदे पड़े हैं | चाँदों के दोनों तरफ भोंम भर ऊँची दिवालें हैं |उन दिवालों में अंदर जाने के लिए दरवाजे हैं |अंदर महलात पड़ी हैं और कई बगीचे ,नहेरें चहेबच्चे और फुहारें छूटते हैं तथा कई हिंडोलें लगे हैं |दिवाल की दोनों तरफ कांगरी हैं और गुमटी कलश और कंगुरें हैं और बाहर दोनों तरफ दो छज्जे हैं |उनमें कठेड़ा ,यही युक्ति करके चाँदे सीधी भोम भोम ऊँचे चली गयी हैं |इन घाटियों का छः लाख कोस का चढ़ाव हैं सो पुखराज के पश्चिम उत्तर के दोनों बड़े दरवाज़ों में आ लगी हैं |

पुखराजी ताल

यह तालाब पुखराज पर्वत के पूर्व दिशा में हैं |ताल बंगलों की चाँदनी से भोम-भोम बढ़ चला हैं |पुखराज की चाँदनी से बीस भोंम नीचे तक बढ़ा और गिर्द चार लाख कोस की होती हैं | तथा ऊँचा चार लाख कोस का हुआ हैं |ताल के चारों तरफ महलाते आईं हैं |और बीस भोम के छज्जे पुखराज के जल की

तरफ आएँ हैं तथा तीन तरफ ताल की महलातें आईं हैं |उनकी बीस भोमे हैं |इनकी चाँदनी और पुखराज की चाँदनी के छज्जे दोनों एक दूसरे से मिले हुए हैं |पुखराज का बड़ा दरवाजा पूर्व की तरफ का यहाँ आया हैं |उसके आगे दो चबूतरे हैं जिसपर के गुर्ज भोम पर भोम आसमान तक चले गये हैं |तिनके बीच दहेलाने आईं हैं |उन दहेलानों के कठेड़े और आगे सीढ़ियाँ उतरी हैं और चारों तरफ छज्जा बराबर हैं और ताल की पाल को घेरकर रोंस का चबूतरा जल के ऊपर आया हैं |उन चबूतरा की दोनों तरफ वन आया हैं और बीच में जवेरो की महलाते आईं हैं तथा अधबीच के कुंड की तरफ बड़े दरवाजे के सामने दहेलाने आईं हैं | उन दहेलानो के सामने ताल की तरफ दो चबूतरे हैं | उनमें हर चबूतरे पर गुर्ज आएँ हैं | सो भोम पर भोम छज्जे कठेड़े आसमान तक चले गये हैं | उन गुर्जों की बीच में सात दहेलाने आईं हैं | उन दहेलानों में सात महेराबे हैं सो चार महेराब के बीच चार नहरें आईं और चार महेराबों की बीच बीच में तीन दहेलाने आईं |उन दहेलानों की दोनों तरफ थम्भो की हार आईं हैं और कठेड़ा फिरता आया हैं |सो इन दहेलानों की ऊपरा-ऊपर उन्नीस भोमे और बीसवीं चाँदनी हैं |जैसे दहेलान के गुर्ज और महेराबे इस तरफ हैं वैसे ही सात महेराबे और दो गुर्ज अधबीच के कुंड की तरफ हैं तथा तीनों तरफ वन आया हैं | पुखराज की तरफ वन नहीं हैं तथा गुर्ज के बीच वन नहीं हैं |वन की दोनो तरफ झरोखे पड़े हैं और वन में हिंडोलें ,चौक महेराब आएँ हैं |इसकी बेशुमार शोभा हैं |ताल की पाल की महलातों में कई हारें मंदिरों की आईं हैं और जवेरो की महलातों की दोनों तरफ छज्जे ,कठेड़े और वन की महलातों

की महेराब और छज्जा कठेड़ा दोनों बाजू परे हैं |पुखराज के छज्जे कठेड़े ये चारों तरफ के दोरी बँध हैं ,ऊपर चाँदनी का छज्जा और ताल का चबूतरा बराबर आया हैं |

अब तालाब में से चार घड़नालों में होकर जल अधबीच के कुंड की तरफ आता हैं | सों दोनों गुर्जों के बीच दहेलान में सात महेराब आईं हैं जिन में से चार महेराबों के नीचे चार नहरें चली जाती हैं और तीन महेराब बीच में आईं हैं ,वहाँ बैठक हैं जिसका ब्यान आगे हो चुका हैं जो महेराबों के नीचे से चार नहरें आती हैं ,उन नहरों का जल स्त्रोत के रूप में कुंड में पड़ता हैं | उसका वर्णन इस प्रकार हैं |कुंड के ऊपर चार छज्जे बढ़ते बढ़ते ऊपरा-ऊपर पड़े हैं सीढ़ियों की तरह |ऊपर का छज्जा चार भोंम का जल की तरफ बढ़ा हैं |उस छज्जे में चार चार पोले थम्भों की तीन हारे आईं हैं | सो ताल की तरफ से चार नहरें आईं हैं | सो पहली हार के पोले जो चार थम्भ हैं उनमें से होकर चार चादरें गिरी हैं और उसके आगे दूसरी हार के पोले चार थम्भ हैं ,जिनमें से चार चादरें गिरती हैं |फिर उनके आगे तीसरी हार के पोले चार थम्भ हैं जिनमें से चार चादरें गिरती हैं और चार चादरें ऊपर के छज्जों में से गिरती हैं इस प्रकार से ऊपरा-ऊपर चार चौके सोलह चादरें अधबीच के कुंड में गिरते हैं |पुखराजी ताल के तरफ से चार घड़नालों में से होकर जल का बड़ा पूर आता हैं और सोलह चादरों द्वारा चार सौ अस्सी भोम ऊपर से नीचे कुंड में गिरता हैं और कर्ण प्रिय बड़ी गर्जना होती हैं |
नीचे ज़मीन से एक भोम ऊँचा बंगला का चबूतरा आया हैं |उस चबूतरे में चार हार फिलपायों की हैं जिसका वर्णन पहले

करके आएँ हैं |जो तालाब के चारों तरफ कमर भर ऊँचे चबूतरे पर जवेरो की महलाते आईं हैं वे इन्हों फिलपायों की सिर के ऊपर आईं हैं और महल के दोनो तरफ वन आया है और कुछ तीसरी बाजू में आया हैं |जहाँ दो गुर्जों के बीच सोलह धाराएँ गिरती हैं वहाँ वन नहीं हैं |वन की और महलों की और एवं पुखराज की चाँदनी बराबर हैं |

अधबीच का कुंड

कुंड के नीचे चार हार फीलपायो की फिरी हैं ।एक तरफ (पश्चिम)बंगलों को मिले हैं ।तीन तरफ और आयें हैं और फीलपायो की कई हारें बीच में आयीं हैं ,उन सब फीलपायो पर मेहराबे हैं ।कई महल ,सीढियां ,और नेहेरें ,चहबच्चे ,फुहारे ,बगीचे ,चौक ,चबूतरे और हिंडोले पड़े हैं तथा तले से ऊपर तक सब युक्तियाँ बेशुमार शोभा से युक्त हैं ।इस कुंड के महलों की चांदनी और बंगलों की छठी चांदनी बराबर हैं तथा चांदनी से ऊपर तक जल भर हैं ,जल के ऊपर चारों और खासमहल की ऊपरा-ऊपर चार भोम और पांचवीं चांदनी पड़ी हैं ।कुंड की चारों तरफ जो खासमहल आयें हैं ,उनमे एक तरफ पहाड़ी (पुखराज ताल)के महल मिले हैं ।तले बीच ऊपर की महलायत की तीनों तरफ छज्जा कठेड़ा और पहाड़ी का छज्जा कुंड के छज्जा से मिला हैं ।ये सब बराबर आयें हैं ।अब चारों गुर्ज चारों कोने में से तले से ऊपर के छज्जा तक आयीं हैं ,जिन छज्जों से सोलह चादरें गिरते हैं और दो गुर्ज इनके मुकाबिल आयीं हैं ।उन गुरजों पर चांदनी हैं और गिर्द कठेड़ा आया हैं तथा चारों तरफ महल आयें हैं

।कुंड को घेरकर चारों तरफ चबूतरा आया हैं ।किनार पर फिरता कठेड़ा हैं ।चबूतरे से तीन तरफ सीढ़ी उतरी हैं और तीन तरफ (पूर्व ,उत्तर ,दक्षिन)महल आयें हैं ।पश्चिम तरफ के महल ताल के मोहोलों से मिले हैं और ऊपरा-ऊपर पांच छज्जे जल के ऊपर आयें हैं ।ऊपर चांदनी आयीं हैं ।उस चांदनी के बाहर किनार में तीन तरफ कठेड़ा फिरता आया हैं और चौथी तरफ ताल के महल आयें हैं इसीलिये वहां कठेड़ा नहीं हैं ,सिर्फ ऊपरा-ऊपर भौमे चली गयी हैं ।जब जल की तरफ बैठाये तब सोलह चादरों की बारीक जल बिंदुओं की वर्षा होती नजर आती हैं और सुमनोहर कर्णप्रिय गर्जना होती हैं ।यह शोभा देखते ही बनती हैं ,शब्द विषय से सर्वथा पर हैं ।

यह अधबीच का कुंड दो लाख कोस का ऊंचा हैं जिसकी ऊपरा-ऊपर पांच सौ भोमे पड़ी हैं ,जो लंबा चौड़ा पुखराजी ताल के तीसरे हिस्सा में हैं ।जहाँ दो पहाड़ो ---पुखराज और ताल महलों की संधि आयीं हैं वहां से फिलपाओं से होकर एक नहर उतरती हैं जो उतर कर एक में से दो होकर दोनों दिशा (दक्षिन-उतर)को होती हुई चारों तरफों फिरके दोनों आ मिली हैं ।फिर वह जल प्रत्येक भोम में होते हुए तथा सर्वत्र विचरते हुए ,बंगलों की चांदनी को प्राप्त हुआ हैं ।वहां से गिर्द बंगलों के चबूतरे पर ,जिन फिलपाओं में जानवरों के मुख बने हुए हैं ,उन फिल्पायो के मुख से "जल तीर ज्यों छुटत "वह जल चबूतरे और बगीचों में परिभ्रमण करता हुआ पुखराज का गोल चबूतरा और बंगला के चौरस चबूतरा की संधि में नीचे

जमीन पर हान्स भर का लंबा चौड़ा और नीचे तरहटी तक का जो गहरा कुंड हैं ,यह जल बगले के चबूतरे से झरना के रूप में उस कुंड में आकर गिरता हैं और वहां से तरहतियों में से होकर श्री जमुना जी कुंड में जाकर मिलता हैं

"बंगलों का चबूतरा "
पुखराज का चबूतरा और बंगलों का चबूतरा ये दोनों बराबर हैं ।उन बंगलों के चबूतरा पर बाहर बगीचे और चहबच्चे आएं हैं ।भोम भर का ऊंचा ,एक बांग्ला का चबूतरा हैं और पुखराज का गल चबूतरा उस पर चौरस चबूतरा आया हैं ।ये दोनों चबूतरे एक दूसरे के मुकाबिल आएं हैं ।इन चबूतरों पर बंगला और चहबच्चे आएं हैं और बंगलों को घेरकर चबूतरा की किनार पर एक हार फिलपायो की आयीं हैं ।सो फिलपाये बंगलों की चांदनी से आ लगे हैं ।प्रत्येक बंगला की चार दिशा में चार बड़े दरवाजे आएं हैं और प्रत्येक बड़े दरवाजे के दाएं बाए तीन तीन सौ मंदिर आएं हैं ।इसी प्रकार चारों असल (तरफ) के चौबीस सौ मंदिर हुए ।पांच भोम के बारह हजार मंदिर हुए ।बंगलों की एक भोम में मंदिरों की पांच भोंमें हैं ,तो मंदिरों की पच्चीस भोंमें हुई ।इस प्रकार पच्चीस भोम के मंदिर साथ हजार हुए ।हर एक बंगला के भीतरी तरफ एक एक हार थंभों की आयीं हैं और प्रत्येक बंगला के भीतर मध्य में चौरस चबूतरे आएं हैं ।वे चबूतरे कमर भर ऊंचे ,चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियां और फिरता कठेड़ा तथा चबूतरे की किनार पर पुनः एक हार थंभों की आयीं हैं ।चबूतरा के ऊपर अति सुन्दर मयूखामयी गलीचा बिछी हैं और बीच में सिंहासन तथा कदेले ,कुर्सियां ,चौकियां ,माचियाँ ,कई साजे संदूक

आदि पड़े हैं ।वहां किस्म किस्म के हिंडोलों की अपार शोभा हैं ।एक एक सखी की अलेखे खूब खुशालियाँ (दासियाँ)अर्थात सेविकाएं हैं ।हरेक बंगला को घेरकर बाहर की और रोंस फिरी हैं ।उस रौस के चारों तरफ से भोम भर नीचे बगीचा को सीढ़ियां उतरी हैं और हरेक बंगला को घेरकर आठ चहबच्चे ,जैसे कि चार खूंटों के भोम भर नीचे और चार चहबच्चे चार दिशाओं में भोम भर ऊंचे ,चबूतरे पर शोभित हैं ,उन आठों चेहेबच्चों से फुहारें छूटते हैं ।वहां ऐसा प्रतीत होता हैं कि जानो एक चेहेबच्चा में से चार चेहेबच्चों में फुहारें पड़ते हैं या चारों में से एक में पड़ते हैं ।जो चहबच्चे भोम भर ऊंचे चबूतरे पर हैं उन चबूतरों में कठेड़े ,बैठक हैं और चारों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं ।प्रत्येक बंगला के मंदिर बारह हजार हैं ।उन बंगलों के गिर्द बारह बगीचे आएं हैं ।इन बगीचों की पांच भोंमें हैं ।सो बगीचों की जमीन और चबूतरों की जमीन बराबर आयीं हैं ।बंगलों की और बगीचों की छत प्रत्येक भोम में बराबर आयीं हैं ।बंगला और द्वादशोद्यानों को आवृत करके चारों और रौंस (नहर) फिरी हैं और चहबच्चे बेशुमार आएं हैं ।कई चहबच्चे चक्राव (चक्रदार)के आएं हैं और वृहद् नेहेरें साम-सामी आवागमन करती हैं ,जंजीर की भांति ।सो नेहेरें बड़े चबूतरा की प्रदक्षिणा कर बंगलों की तरहटी को प्राप्त होती हैं .उसकी परिपूर्ण शोभा हैं ।जैसी तरहटी पुखराज की हैं वैसी तरहटी बंगलों की हैं ।अब पुखराज और बंगलों के चबूतरा की संधि में भोम भर नीचे एक हान्स भर का लम्बा चौड़ा कुंड आया हैं एक नहर खजाने के ताल में से उस कुंड में आती हैं और एक नहर बंगला के चबूतरे में से उतरती हैं जिसका ब्यान पहले ही हो चूका हैं ।सो दोनों नेहेरें यहाँ से

संश्लिष्ट हो चली हैं ।उस नहर के दोनों किनारे थंभों की हार ,कठेड़े ,और बैठके बनी हैं ।नहर बंगलों की तरहटी में से होते हुए अधबीच के कुंड के आगे जो ढँपा चबूतरा हैं ,उस ढँपे चबूतरा के आगे मुलकुण्ड में प्रविष्ट होती हैं ।

ढँपा चबूतरा

इस चबूतरा के अंदर तरहटी में महलायतें आयीं हैं और वन ,बगीचे ,नेहेरें ,चहबच्चे हैं तथा फुहारे छूटते हैं ।ऊपर चांदनी की किनार पर तीनों तरफ फिरता कठेड़ा आया हैं पश्चिम तरफ अधबीच के कुंड के महल आएं हैं इसीलिए कठेड़ा नहीं हैं ।

मूलकुण्ड

मूलकुण्ड की तरहटी में चारों तरफ महलातें आयीं हैं और नहर चहबच्चे हैं तथा फुहारे छूटते हैं यहाँ बेशुमार शोभा हैं ।जहाँ पर कुंड हैं वहां तरहटी से दो भोम ऊंची दीवाल उठी हैं ।इसको कोठ कुंड कहते हैं ।ऊपर चांदनी में कुंड की चारों तरफ कठेड़े लगे हैं ,और बाहिरी किनार पर तीन तरफ कठेड़े हैं ।पश्चिम की तरफ ढँपा चबूतरा का कठेड़ा हैं ।ऊपर से दोनों तरफ से वृक्षों ने छाया डाल रखी हैं तथा भोम भर नीचे पूर्व की तरफ चार घड़नालों में होकर जल का प्रवाह प्रगट होता हैं ।

श्री यमुना जी प्रकट हो चली

चार सौ कोस की चौड़ी जगह पर यमुना जी का प्रवाह हैं अर्थात चार कोस का चौड़ा पाट हैं यमुना जी दोनों तरफ रौंसे हैं और रौंस से कमर भर ऊंची दोनों तरफ पाल हैं ।पाल से कमर भर नीचे दोनों तरफ वन तरफ की रोंस हैं ।उन दोनों रोंसों में दो दो कतारें वृक्षों की फिरी हैं ।यमुना जी दोनों तरफ की पाल का वर्णन कर आएं हैं ।उन पालों में दो दो थंभों की हार आयीं हैं ।उन थंभों के ऊपर चांदनी पर पांच पांच देहुरियाँ आयीं हैं और प्रत्येक देहुरी में कलश तथा ध्वजा फहराते हैं ।श्री यमुना जी दोनों पाल ऊपर के थंभों की मेहराबों से ढंकी हुई हैं अर्थात छत आयी हैं ।उस छत के ऊपर बड़ी बड़ी पांच देहुरियाँ आयीं हैं ।अतएव इसे ढँपी यमुना जी भी कहते हैं ।

पांच देहुरी के बाद श्री यमुना जी खुली हैं और दोनों पाल पर पांच पांच देहुरी आयीं हैं ,किन्तु यमुना जी के ऊपर देहुरियाँ नहीं हैं इस लिए खुली यमुना जी कहते हैं ।आगे ईशान कोण से श्री यमुना जी ने दक्षिण की और मरोड़ खायीं हैं वहां कोने पर चार हिंडोले की ताली पड़ती हैं ।कोने पर दोनों पाल में चार महल हैं ,उन महलों की कमानों में हिंडोले लटके हैं ।दो हिंडोले जल के ऊपर स्थित हैं और दो हिंडोले पाल पर हैं ।चारों हिंडोलों की ताली जल पर पड़ती हैं ।

यहाँ से श्री यमुना जी धाम परमधाम के चौदह घाटों की संधि में एवं दोनों पल के नीचे होकर अगिन कोन तक पहुंची और यहाँ से पश्चिम की और मरोड़ खाकर "मदीयं सर : '--हौजकौसर *को जाती हैं ।इन दोनों मरोड़ पर पांच पांच महल और चार चबूतरे ,दोनों पाल पर सुशोभित हैं ।श्री यमुना

जी के दोनों बाहिरी रौंस में दो दो वृक्षों की कतारें चली जाती हैं ।इस प्रकार अगिन कोन से पश्चिम की तरफ मरोड़ खाकर श्री यमुना जी सोलह देहुरी के घाट के नीचे होकर "मदीयं सर : '--हौजकौसर तालाब संप्राप्त हुई हैं ।इसका वर्णन पूर्व में कर आएं हैं ।

केल का पुल

ग्यारह ग्यारह थंभों की ग्यारह हारें जल की जमीन से ऊपर तक आयीं हैं ।उन थंभों के बीच दश घड़नाले हैं जिनमें होकर जल का पूर पार होता हैं और दोनों पाट घाट में तीन तीन घड़नालें हैं उन छहो घड़नालों में से होकर छः नेहेरें जाती हैं और चार नेहेरें दोनों पाट के बीच में से हो जाती हैं ।ऐसे पुल के दश घड़नालों में से विभक्त हुआ जल उसी रूप में आगे बटपुल के देशो घड़नालों में होकर चला जाता हैं ।श्री यमुना जी के ऊपर केल पुल और बटपुल आमने सामने झलकते हैं ।पुल का वर्णन पूर्व में हो गया हैं ।इन दोनों पुलों के बीच सात घाट सुशोभित है ।

केल का घाट

श्री यमुना जी के मूल से दोनों तरफ का चबूतरा (पाल)चला ,सो हौजकौसर तालाब को जा मिला है और चबूतरे की दोनों तरफ कमर भर नीचे दो रौंस आयीं हैं ।उन रौंसों पर दो हार वृक्षों की आयीं हैं और उभय पाल पर बड़े वन की पांच वृक्ष की पंक्तियाँ विद्यमान हैं ;जो कि लाल चबूतरा और मधुवन कि

संधि में से बड़े वन के पांच वृक्ष केल घाट में होते हुए पाल के ऊपर स्थित हैं ।इनकी पांच भोम छठी चांदनी हैं और नीचे पाल पर चौकों कि चार हारें आयीं हैं ।इन चौकों के बीच केलों के बगीचे आएं हैं और दीवालें ,गली ,थम्भ ,मेहराब वृक्षों की आयीं हैं और ऊपर लटकते हैं ।इन चौकों के पाँचों भोमों में हिंडोले लगे हैं ,और जहाँ दो घाट की संधि आयीं हैं ,वहां पर एक देहुरी चबूतरे पर आयीं हैं *(यह देहुरी यमुना जी की भीतरी रौंस की हद पर आयीं हैं)ऐसे चौक देहुरी सातों घाटों में आयीं हैं ।केल घाट की चौड़ाई पांच सौ मंदिर भर और लम्बाई बड़ा वन तक हैं ।श्री यमुना जी के दोनों किनार जरी-मणियों से जड़ित हैं ।जैसी श्री यमुना जी की पाल इस तरफ हैं ,वैसी ही अक्षर धाम की तरफ भी शोभित हैं ।

लिबोई का घाट

चौको में नीबू के वृक्ष दोरी बंध अत्यंत शोभायमान हो रहे हैं और द्वार मेहराबी आयें हैं ।नीचे पेड़ जुदे जुदे और ऊपर सब की छत्री एक हैं ।कई रंगों के रत्नों से जड़ित सा चन्द्रवा झलकता हैं और पाल के चबूतरा पर से सीढ़ियां उतरी तथा जल में जो चबूतरा हैं ,उस चबूतरे पर कमर भर ऊंचा जल हैं ।श्री यमुना जी की किनार पर जो रौंस हैं ,उस रौंस से तीन सीढ़ी उतर कर जल क्रीड़ा करते हैं और श्री यमुना जी की रौंस से तीन सीढ़ी ऊंची फिरती पाल हैं ।उस पाल पर बड़े वन के वृक्षों की पांच हारें आयीं हैं ।उन वृक्षों की पांच भोम छठी चांदनी हैं ।यह निम्बू का घाट ताड़वन के मुक़ाबिल आया हैं

।इस घाट की दो भोम तीसरी चांदनी हैं तथा चौड़ाई पांच सौ मंदिर की और लम्बाई धाम दीवाल तक हैं ।

अनार का घाट

श्री यमुना जी की पाल एक ही हीरे की सुशोभित हैं ।उस पाल पर पांच हारें बड़े वन के वृक्षों की आयीं हैं और उनके जो चौक पड़े हैं ।उनमें प्रत्येक चौक में चौबीस की चौबीस हारें अनार (दाड़िम)वृक्षों की आयीं हैं ।उन वृक्षों में भी चौक पड़े हैं तथा उन चौकों के बीच वीथियाँ दोरी बंध आयीं हैं ।उन वृक्षों की दो भोम तीसरी चांदनी हैं ।उनके ऊपर तीन भोंमें बड़े वन की और आयीं हैं और इस पाल पर से यमुना जी की रौंस के प्रति रत्न खचित तीन तीन सीढ़ियां उतरी हैं ।यह चौड़ाई में पांच सौ मंदिर भर हैं ,और लम्बाई में रंग महल की दीवाल तक हैं ।इस घाट के सामने रंग महल की दीवाल पर प्रत्येक भोम में पांच पांच सौ झरोखे और हजार हजार मेहराबों की शोभा हो रही हैं ।जब इन मेहराबों में बैठिए ,तब तले की भोम नजर आती हैं ।वन की दूसरी भोम रंगमहल की प्रथम भोम ,ये दोनों मुक़ाबिल आयें हैं और जमीन पर दो मंदिर के अंतर से अनार के वृक्ष आयें हैं ।।अतएव एक घाट पर चौड़ाई में अढ़ाई सौ वृक्ष आयें हैं
।

पाट घाट

सोलह स्तम्भ जल की जमीन से ऊपर तक आयें हैं ।उन

सोलह स्तम्भों के ऊपर यमुना जी की रोंस के बराबर में एक चबूतरा हैं ।उस चबूतरे के ऊपर बारह थम्भ आयें हैं और ऊपर चांदनी पड़ी हैं ।इसका वर्णन पूर्व में कर आयें हैं ।इस पाट से लगता जाम्बु का घाट हैं ।जाम्बु के घाट के पश्चात नारंगी का घाट हैं ।तत्पश्चात बट का घाट हैं ।बट के घाट के मुक़ाबिल बट का पुल हैं ।दोनों पुलमहल साम सामे झलकते हैं ।इनके बीच में सात घाट शोभित हैं ।जैसे सात घाट इस तरफ हैं ,वैसे ही अक्षर की तरफ भी हैं ।श्री यामीन जी की जरी जड़ित दोनों किनार की शोभा देखते हुए प्रदक्षिणा देकर पाट के घाट पर आइये ।

छोटी रांग -चार हार हवेली

छोटी रांग की हवेलियां धाम परमधाम ,माणिक गिरि ,पुखराज पर्वत ,जवेरों की नेहेरें और वन की नहरों को घेर कर फिरी है तथा बड़ी रांग से लगती हुई हैं ।एक हवेली के चार बड़े बड़े दरवाजे हैं ।एक हवेली के चार दरवाजे बड़े बड़े हैं ।ये हवेलियां भोम भर ऊंचे चबूतरे पर विद्यमान हैं ।इन हवेलियों के चारों तरफ प्रदक्षिणा के लिए रौंस फिरी हैं ।उस रौंस की किनार पर फिरता कठेड़ा हैं ।चारों दरवाजों के आगे चांदनी चौक ,तथा हरेक चांदनी चौक के चबूतरों पर लाल हरे वृक्ष हैं ।हवेली में प्रवेश होते दाहिनी तरफ लाल वृक्ष और बायीं तरफ हरा वृक्ष हैं । हवेलियों की दिवाल से लगते हुए भोम भर ऊंचे दरवाजे के दोनों और दो चबूतरे हैं ,तथा उन चबूतरों पर थम्भ और मेहराबें हैं ।

चांदनी चौक से भोम भर की सीढ़ियां चढ़कर दरवाजे पर आइये ।इन सीढ़ियों के दोनों तरफ परकोटे और उन परकोटों पर कांगरी शोभती हैं ।आगे चलकर देखने से बारह हजार हवेलियों की बारह हजार पंक्तियाँ नजर आती हैं ।इस प्रकार प्रथम भोम में चौदह करोड़ चालीस लाख हवेलियों की अपार शोभा हो रही हैं ।ऐसी भोमेन ऊपराऊपर बारह हजार हैं ।प्रत्येक हवेली में कई महल ,कई मंदिर ,कई कोठरियां ,कई चौक ,कई चबूतरे ,कई थम्भ ,कई हिंडोले ,कई बगीचे ,कई नेहेरें ,कई चहबच्चे तथा कई फुहारों की भरपूर शोभा हैं ।ऐसी शोभा प्रत्येक भूमिका में हैं ।जैसा वर्णन एक हवेली का हैं वैसा ही वर्णन सब हवेलियों का है ।एक एक हवेली के चार कोण पर चार चार बगीचे हैं ।हरेक बगीचे में कई तरह के वृक्ष हैं और बगीचों में नेहेरें ,चहबच्चे ,किस्म किस्म के फुहारे छुटते हैं ।ऐसी ऐसी हवेलियों की चौड़ाई में चार हारें हैं और गोलाई में एक हार बत्तीस हवेली की हैं ।चारों हार हवेलियों की एक सौ अट्ठाइस की संख्या हैं ।उनमें प्रत्येक हवेली के चारों तरफ बगीचे तथा कई कला हुनर से भरपूर सड़के विद्यमान हैं ।यह बहुत विस्तृत सरंचना हैं ।

बड़ी रांग

यह बड़ी रांग (दुर्ग) हैं ।अब तो जो कुछ पूर्व में वर्णन कर आएं हैं उन सबको इस रांग ने आवृत किया हैं ।रांग की मेहलातें (इमारते) जमीन से भोम भर ऊंचे चबूतरे पर जगमगाकारेण विद्यमान हैं ।इस रांग के बत्तीस पहल हैं ।प्रत्येक पहल में वर्तुलाकार गगनचुम्बी गुर्जें जाज्वल्यमान हैं

।जैसे बत्तीस पहल भीतर हैं ,वैसे ही बाहर भी हैं और बत्तीस पहल मध्य में हैं ।प्रत्येक पहल में बारह बारह हजार की बारह बारह हजार पंक्तियाँ हैं अर्थात चौदह करोड़ चालीस लाख हवेलियां आयीं हैं और ऊपराऊपर बारह * हजार भोंमें जगमगाती हैं ।प्रत्येक हवेली के अंदर कई महल ,कई मंदिर और कई कोठरियां सुशोभित हैं और मध्य में चबूतरे ,थम्भ उन थंभों में हिंडोलों की अपार शोभा हो रही हैं और नेहेरें चहबच्चे ,तथा फुहारे प्रत्येक उद्यान में परिपूर्ण हैं ।

उपरोक्त मध्य के बत्तीस खांचों में से आठ पहल (चार दिशा और चार कोण) में अष्ट सिंधु लहरा रहे है तथा अष्ट पहल में आठ रंगों की क्षिति प्रकाशित हो रही हैं एवं ।सोलह पहलों में रांग की महलातें झलक रही हैं ।इस प्रकार उभय क्षिति के मध्य में समुद्र और उभ्यार्णव के मध्य में क्षिति एवं जलधि और क्षिति के मध्य में महलातें विराजमान हैं ।इस प्रकार अष्ट पहल में समुद्र और अष्ट पहल में जमीन और सोलह पहल में महलातें सुशोभित हैं ।

*महाकोशों के एक एक कोष की ऊंची बारह हजार भोम ,उन बारह हजार भोम की एक भोम ,ऐसी ऐसी बारह हजार भोंमें हैं ।

"अस्सी दीवाल "

बत्तीस संधियां भीतरी तरफ और बत्तीस बाहिरी तरफ एवं सोलह संधियां मध्य में कुल अस्सी संधियां हुई ।इन अस्सी

संधियों पर अस्सी हवेलियों की दिवाल हैं ।उन दीवालों के भीतर बारह बारह हजार हवेलियों बारह बारह हजार पंक्तियाँ सुशोभित हैं ।भीतरी तरफ जो बत्तीस संधियां हैं ,उनमें प्रत्येक संधि में बारह हजार चांदनी चौक ,और प्रत्येक चांदनी चौक में हरे लाल वृक्ष ,मानो इन हवेलियों के द्वारपाल हो ,ऐसा प्रतीत होता हैं ।इसी प्रकार बहार भी बत्तीस संधियां हैं और इसी प्रकार प्रत्येक संधि में चांदनी चौक और हरे लाल वृक्षों की शोभा हो रही हैं ।

मध्य भाग की संधियां (टापू महल)

प्रत्येक समुद्र के तीसरे भाग में ,बारह हजार टापुओं की बारह हजार पंक्तियाँ जलजवत सौरभ बड़ा रही हैं ।इनमें प्रत्येक टापू महल के अभितः जल भरपूर हैं अतएव एक टापू से दूसरे टापुओं में गमनागमन के लिए अप्राकृतिक कला से विभूषित अन्तर्यामी एवं चैतन्य तरिणी सेवा में सदैव उपस्थित रहती हैं ।इन टापू महलों के ऊपराऊपर बारह हजार भूमिकाएं सुशोभित हैं ।इन टापू महलों में परस्पर गमनागमन के लिए मध्म में व्योम मार्ग हैं अथवा भोम से भोम मिली नहीं हैं ।ऊपर सब की चांदनी पृथक पृथक ही हैं ।प्रत्येक टापू अथवा चौदह करोड़ चालीस लाख टापुओं की चांदनी पर जिस प्रकार अधः रत्नाकर विचियो से सुमनोहर दृष्टिगोचर होता हैं ,इसी प्रकार इन चाँदनियों पर भी महोद्यान अपने पुष्प ,मंजरी- सौरभ मंडल द्वारा सबके मन को आकर्षित करते ही रहते हैं ।अपितु इनका वर्णन करना सामर्थ्यातीत हैं ।इन टापू

महलों के चारों दिशा में हरे लाल वृक्षों के सहित चांदनी चौक सुशोभित हैं और इन टापुओं की चांदनी पर खड़े होकर समन्ततः दृष्टिपात करने से हरे लाल वृक्षों के समेत अड़तालीस हजार चांदनी चौक देदीप्यमान दृष्टिगोचर होते हैं और भोम भर ऊंचाईं पर दीवाल से लगे हुए प्रत्येक दरवाजे के दोनों तरफ दो चबूतरे हैं ।अड़तालीस हजार दरवाजों के छयानब्बे हजार चबूतरे दिव्याकारेण सुशोभित हैं और चांदनी चौक से भोम भर के सोपान द्वारा आरोहण कर दिव्य प्रकारान्तर्गत अवलोकन करने से प्रत्येक प्रासादों के अंदर कई सहस्त्रों सूर्य उदय होते हैं ,ऐसा श्रुतिदेव में कथन हैं ।"अरश सूर कै एक महल मैं "(यहाँ सूर्य प्रकाश करने के लिए नहीं उगते ,अपितु महलों में "पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।" "आ सूर्य भाति उतऽशिष्टे ।ब्रह्मणि श्रिताः आश्रिताः सूर्यश्चायाम ।"अर्थववेद

अष्ट क्षिति

प्रत्येक क्षिति उभयार्णव के रंगों कर के दो भागों में विभाजित हैं और आठों जमीं पर चैतन्य वनों के कई खण्डों की महलाते हैं ,उनमें प्रत्येक खण्डों में पशु पक्षियों के निवासस्थान हैं ।इन स्थानों में असंख्य पशु पक्षीगण स्व-स्व भाषया श्री राज श्यामा जी के गुणानुवाद गाते ही रहते हैं ।इन में प्रत्येक क्षिति के वसु दिशाओं में अनन्तानंदाश्चर्यजन्य पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं और प्रत्येक दिशा में द्वादश सहस्त्र हवेलियों के सहित रक्त हरित वृक्षों के बारह हजार चांदनी चौक हैं ।अर्थात चारों

दिशा में मिलकर अड़तालीस हजार चांदनी चौक जगमगाकारेण सुशोभित हैं ।

हरेक हवेली के चारों दिशा में चार वृहद् द्वार हैं और छोटे दरवाजों का सुमार नहीं हैं ।हवेलियों के अंदर का वर्णन पूर्व में आ गया हैं ।जैसी एक हवेली की रचना हैं उसी प्रकार सम्पूर्ण हवेलियों की रचना हैं ।इन रंग महलातों के दोनों तरफ दो दो चौंखुटे गुर्ज और हर एक दरवाजे के ऊपर अनन्ताश्चर्यजन्य श्रृंगारों से विभूषित कमानें शोभा बढ़ा रही हैं ।उन कमानों पर रत्नखचित स्वर्ण कुम्भ सुशोभित हैं ।इसी प्रकार रंग की बाहिरि किनार एवं भीतरी किनार के हवेलियों के प्रत्येक चौरस गुरजों के ऊपर रत्न विभूषित गुमट हैं ।इन गुंतो पर हिरण्य कलशें तथा उन कलशों पर ध्वजापताकाएँ फहराती हुई आकाश के साथ संश्लेष (आलिंगन)कर रही हैं ।यह आनंदमयी शोभा देखते ही बनता हैं ,किन्तु वर्णन नहीं हो सकता ।इन हवेलियों की चांदनी पर कांगरी ऐसी प्रतीत होती हैं ,मानों साक्षात् देहधारी विद्युतों की बस्ती बसी हो और बहार भीड़ उभय किनार में गुटों की किनारे ऐसी संविदित होती हैं ,कि असंख्य सूर्य रश्मिरूपी सेना लिए दिव्य ब्रह्मपुर की चौकी कर रहे हो ।

अष्ट सागर

नूराब्धी --यह नूर सागर पूर्व और दक्षिण के कोने पर विद्यमान हैं ।जहाँ श्वेत वन ,श्वेत पशु पक्षी ,श्वेत महलातें ,श्वेत

जमीन ,श्वेताकाश ,श्वेत वायु ,श्वेतोदकयावट्पदार्थ श्वेत रंग के हैं ।

नीर सिंधु

अवाची दिशा पर नीर का समुद्र हैं ।जहाँ रक्त वन ,रक्त पशु पक्षी ,रक्त महलातें ,लोहित क्षिति ,लोहिताकाश ,रक्तवायु ,रक्ताम्बु ,यावत सामग्री लालरंग की हैं ।

क्षीरोदधि

दक्षिण और पश्चिम कोण पर क्षीर अकूपार हैं ।जहाँ पित विपिन ,पिंगल पशु पक्षी ,पित महलातें ,पिताकाश ,पित जल ,पित मरुत ,यावत पदार्थ सम्पूर्ण पीले रंग के है ।

दध्यर्णव

प्रतीची दिशा पर दधिसरस्वान हैं ।जहाँ हरित कानन ,हरित पशु पक्षी ,हरित माहि ,हरित व्योम ,हरित जल ,हरित वायु यावत पदार्थ सम्पूर्ण हरे रंग के हैं ।

घृत पारावार

पश्चिम और उत्तर के कोण में सर्पिषयादःपति हैं ।जहाँ व्योम रंग वन ,आसमानी रंग आकाश ,व्योम रंग पशु पक्षी ,व्योम रंग महलातें ,व्योम रंग क्षिति ,व्योम रंग जल ,व्योम रंग वायु और यावत पदार्थ आसमानी रंग के हैं ।

मधु समुद्र

यह समुद्र उदीची दिशा पर हैं।जहाँ सिम रंग वन ,श्याम रंग पशु-पक्षी ,श्याम रंग महलातें ,श्याम रंग जमीं ,श्याम रंग वायु ,श्याम रंग वन ,श्याम रंग सलिल ,एवं सम्पूर्ण पदार्थ श्याम रंग के हैं ।

रस सागर

यह सागर उत्तर और पूर्व के कोण में विद्यमान हैं ।यहाँ दश रंग के वन ,दश रंग के पशु पक्षी ,दश रंग की मेहलातें ,दश रंग की उर्वी ,दश रंग का वायु ,दश रंग आकाश ,दश रंग आप और सम्पूर्ण चीजें दश रंग की हैं ।

॥सर्व रस महार्णव ॥

प्राची दिशा पर सर्वरस सागर अनंत उर्मि सहित लहरा रहा हैं ।यहाँ पर सबरंगों के वन ,सर्व रंगों के पशु-पक्षी ,सर्व रंगों की जमीन ,सर्व रंगों की महलातें ,सर्व रंगों का जल ,सर्व रंगों का वायु ,सर्व रंग आकाश और सम्पूर्ण वस्तु सम्पूर्ण रंगों की हैं ।

"नूर नीर क्षीर दधि सागर ॥
घृत मधु एक ठौर ॥
रस सर्व रस सागर ॥
बिना सखियाँ ना पावे कोई और ॥

अष्ट समुद्र वसु रंग की क्षिति और अस्सी संधियों की महलाते
तथा श्री परमधाम की नौ भोम दशमी चांदनी ,ये तो सदैव
रमण बिहार की जोगबाई हैं ।श्री परमधाम का अंत नहीं हैं ।

श्री महामति कहे ये सखियों ।ये सुख अपने धाम के ॥
एक पलक छोड़े नहीं ,भला चाहे आपको जे ॥

इति श्री मदस्वामी लालदास जी महाराज विरचितं
श्री परमधाम सक्षिप्त वर्णन
समाप्तम ।